छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास : बैसाख कृष्ण/शुक्ल पक्ष, संवत् 2075
अप्रैल 2018

ओ३म्

अंक 151, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

हुतात्मा महाशय राजपाल

शहीद मंगल पाण्डे

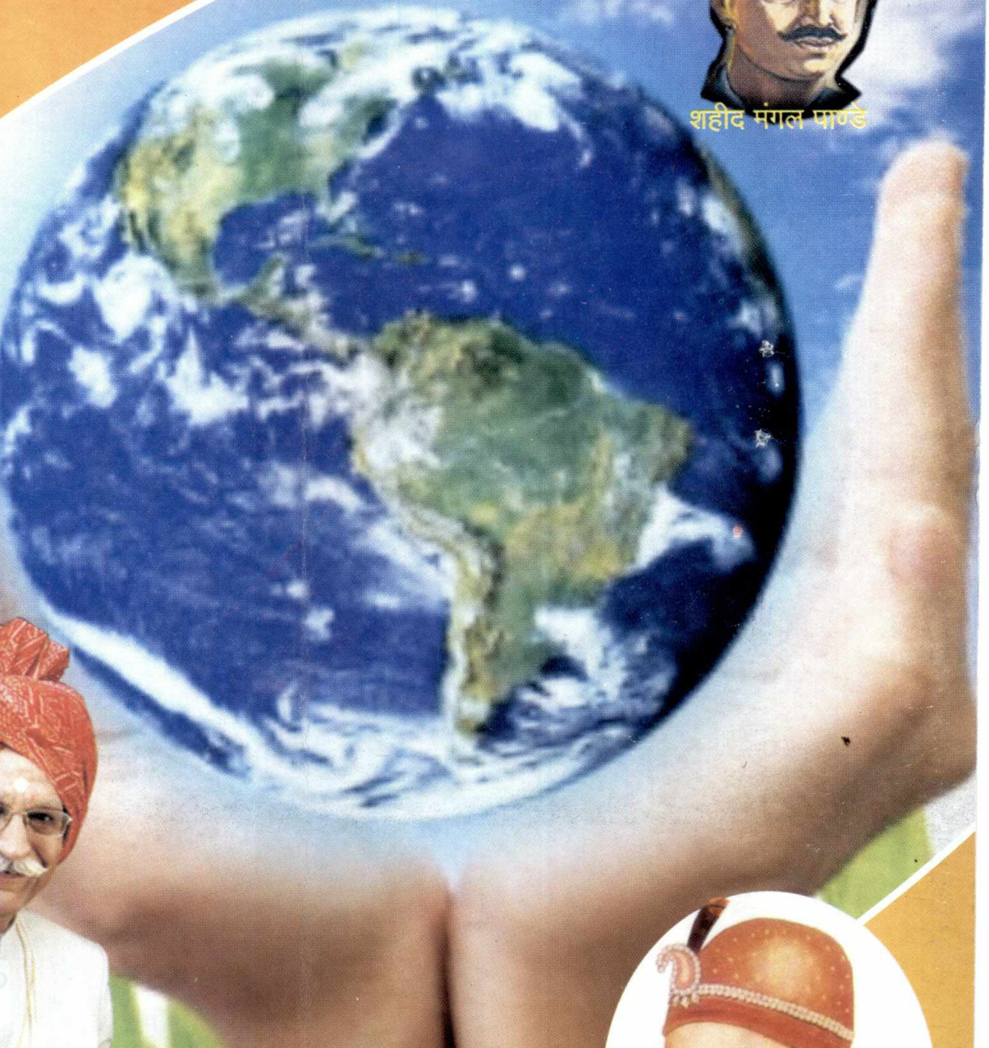

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, कर्मठ नेता, समाजसेवी

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) को

95वें जन्म दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

वीर तात्या टोपे

दिनांक 26 मार्च 2018 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 95वाँ महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) का जन्म दिवस समारोह तालकटोरा स्टेडियम दिल्ली में सोल्लास सम्पन्न की झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७५
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२०
दयानन्दाब्द - १९५

वर्ष - १३, अंक ९ ओ३म् मास/सन् - अप्रैल २०१८

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम् ,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	मैं भिक्षुक, तू दाता	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	एक वैश्विक संगठन है आर्यसमाज	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	भारत की भौतिक उन्नति का मार्ग	श्रीयश देवपुजारी	०८
४.	परीक्षा में अधिक अंक लाने के उपाय	स्वामीशान्तानन्द सरस्वती	११
५.	वानप्रस्थाश्रम की उपादेयता	मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति	१२
६.	अब करना होग इनका इलाज	डॉ. रवि प्रभात	१५
७.	धार्मिक क्रान्ति के सूत्रधार- स्वामी दयानन्द	हरेन्द्र राय	१६
८.	ग्रीष्म ऋतु चर्या	रसवैद्य डॉ. प्रेमदत्त पाण्डेय	१८
९.	वेदप्रचार की दुन्दुभि	डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह	२०
१०.	हुतात्मा महाशय राजपाल की बलिदान गाथा	विश्वनाथ	२२
११.	सन् सत्तावन के महानायक - तात्या टोपे	आचार्य बलदेव	२४
१२.	प्रथम स्वातन्त्र्य समर के प्रथम शहीद - मंगल पाण्डे	मुक्त ज्ञान कोष	२६
१३.	पृथ्वी बचाओ	ऋषि आर्य	२७
१४.	नीरोग रहने के लिए कुछ उपयोगी सुझाव	दीपाली वर्मा	२८
१५.	मुस्लिम समस्या का निदन-कुछ सूत्र	रमेशचन्द्र चौहान	२९
१२.	मोटापा और होमियोपैथी चिकित्सा	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३०
१३.	समाचार प्रवाह		३१

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

मैं भिक्षुक, तू दाता

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

अच्छा च त्वैना नमसा वदामसि, किं मुहश्चिद् वि दीधयः ।
सन्ति कामासो हरिदो ददिष्ट्वं, स्मो वयं सन्ति नो धियः ॥ ऋग्. ८.२१.६

ऋषिः **सौभरि काण्वः**।। देवता **इन्द्रः**। छन्दः **पंक्तिः**।

● (हरिदः) हे ऋक्-सामरुप हरियोवाले ! **(त्वा अच्छ व)** तेरे अभिमुख (होकर) **(एना)** इस **(नमसा)** नमस्कार के साथ **(वदामसि)** (हम) प्रार्थना कर रहे हैं, **(मुहः चित्)** फिर भी (तू) **(किं वि दीधयः)** किस सोच में पड़ा हुआ है ? **(कामासः)** मनोरथ **(सन्ति)** विद्यमान हैं, **(त्वं)** तू **(ददिः)** दाता (विद्यमान) है। **(वयं स्मः)** हम विद्यमान हैं, **(निः धियः)** (और) हमारी बुद्धियां तथा कर्म (सन्ति) विद्यमान हैं। फिर भी तेरी कृपा क्यों नहीं हो रही है ?)।

हे इन्द्र! हे परम ऐश्वर्य के धनी परमात्मन्! तुम हरियों वाले हो, ऋक् और साम-रुप तुम्हारे दो हरि हैं। ऋक् सत्योक्ति है, साम संगीत हैं, ऋक् अर्चना है, साम स्वर की लहर हैं, ऋक् सत्यज्ञता है, साम सत्याचरण है, ऋक् धृति है, साम धैर्यालम्बन है, ऋक् सृष्टि है, साम सृष्टिकरण है, ऋक् गति है, साम स्थैर्य है, ऋक् प्रीति है, साम सौन्दर्य है, ऋक् कला है, साम कला का सर्जन है, ऋक् नीति है, साम धर्म है, ऋक् क्षमा है, साम स्नेह है, ऋक् प्रज्ञा है, साम मन है, ऋक् भद्रता है, साम भद्र-व्यवहार है, ऋक् कान्ति है, साम शान्त साम्राज्य है, ऋक् दृढ़ता है, साम मृदु स्वभाव है। तुम इन समस्त हरि-युगलों को अपने साथ साधे हुए हो।

हे सर्वशक्तिमान् परमेश! हम पूर्ण नमस्कार के साथ, हृदय की सम्पूर्ण प्रणति के साथ तुम्हारे प्रति विनीत भाव से अपनी विनति पहुंचा रहे हैं, प्रार्थना कर रहे हैं, दिव्य ऐश्वर्यों की याचना कर रहे हैं। फिर भी, न जाने तुम किस सोच में पड़े हुए हो, इधर ध्यान ही नहीं देते। अब यह स्थिति हमारे लिए असह्य हो उठी है। सब कारण-सामग्री विद्यमान है, फिर भी कार्योत्पत्ति नहीं हो रही है। हमारे अन्दर अभीष्ट दिव्य ऐश्वर्यं की प्राप्ति के उत्कट मनोरथ विद्यमान हैं, तुम दाता भी विद्यमान हो, हम भी विद्यमान हैं, हमारी बुद्धियां और कर्मशीलताएँ भी विद्यमान हैं। तुम्हारे दान के प्रवृत्त होने के लिए कब किस बात की कसर है? अतः हे देवेश! अब तो तुम अपने दान को हम पर बिखेरो, अपनी दान-वृष्टि से हमें स्नात करो, हमारी भिक्षा की झोली में कुछ दिव्य सम्पत्ति डालो। हमें तो इस बात की भी आग्रह नहीं है कि जो कुछ हम मांग रहे हैं, वहीं हमें दो। हमने तो पूर्णतः तुम्हें आत्म-समर्पण कर दिया है। जो कुछ हमारे लिए हितकर हो, वह हमें दे दो। हे प्रभुवर! हम भिक्षुक है, तुम दाता हो। हमारी भिक्षा की झोली भर दो।

संस्कृतार्थ :- १. ऋक्मासे वा इन्द्रस्य हरी (षड् ब्रा १.१)। हरि मतुप् म को व। २. वदामसि वदामः। ३. विपूर्वो दीधितिः चिन्तने (सायण)।

सम्पादकीय

एक वैश्विक संगठन है आर्यसमाज

प्रिय पाठकों! अभी पिछले दिनों हमने चैत्र शुक्ल पञ्चमी को आर्यसमाज की स्थापना दिवस मनाया गया। आत्म विश्लेषण किया, क्या खोया क्या पाया। निश्चय ही हमारा अतीत स्वर्णिम था, किन्तु वर्तमान में यह तेजस्विता नहीं जो होनी चाहिए। आइये एक नजर डालते हैं कैसी दृष्टि थी इस महान संगठन की स्थापना के बाद १९वीं शताब्दी में जब मानवता कराह रही थी, सारा संसार, दमन, शोषण की आग में जलता हुआ नजर आ रहा था, मानवता पथभ्रष्ट होकर यत्र-तत्र प्रकाश आश्रय पाने के लिए भटक रही थी, ऐसी विषम परिस्थिति में एक महान् ज्योतिर्धर दिव्य-दिवाकर दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होने सारे संसार का उपकार करने के उद्देश्य से वेद के आधार पर एक सार्वभौम संगठन की सन् १८७५ में सर्वप्रथम बम्बई में नींव डाली, जिसका नाम था - "आर्यसमाज" । आर्यसमाज क्या है ? इसका अमेरिका के महान् परोक्षदर्शी विद्वान् ऐन्ड्रूज जैक्सन के शब्दों में ***"मुझे एक आग दिखाई पड़ती है । जो सर्वत्र फैली हुई है- अर्थात् असीम प्रेम की आग जो कि द्वेष को जलाने वाली है और प्रत्येक वस्तु को जलाकर शुद्ध कर रही है । अमेरिका के शीतल मैदानों, अफ्रीका के विस्तृत देशों, एशिया के प्राचीन पर्वतों और यूरोप के विशाल राज्यों पर मुझे इन सबको जलाने वाली और इकट्ठा करने वाली आग की ज्वालायें दिखाई देती है। इसकी चर्चा निम्नस्थ देशों में से उठी है। अपने सुख और उन्नति के लिए इसे मनुष्य ने स्वयं प्रज्वलित किया है।***

हिन्दू और मुसलमान इस प्रचण्ड अग्नि को बुझाने के लिए चारों ओर वेग से दौड़े, परन्तु यह आग ऐसे वेग में बढ़ती गई कि जिसका इसके प्रकाशक स्वामी दयानन्द को ध्यान भी नहीं था और ईसाईयों ने भी जिनके मत की आग और दीपक जो पहले पहल पूर्व में ही प्रकाशित हुए थे, एशिया ने इस नये-प्रकाश को बुझाने में हिन्दुओं और मुसलमानों का साथ दिया, परन्तु यह ईश्वरीय आग और भी भड़क उठी और सर्वत्र फैल गई।

सम्पूर्ण दोषों का संघ नित्य आत्मतत्व को शुद्ध करने वाली भट्टी में जलकर भस्म हो जायेगा। यहां तक कि रोग के स्थान में आरोग्य, झुठे अविश्वासों की जगह तर्क, पाप के स्थान में पुण्य, अविद्या की जगह विज्ञान, द्वेष की जगह मित्रता, बैर कीजगह समता, नरक के स्थान में स्वर्ग, दुःख की जगह सुख, भूतप्रेतों के स्थान में परमेश्वर और प्रकृति का राज्य हो जायेगा। मैं इस अग्नि को मांगलिक समझता हूँ। जब यह अग्नि सुन्दर पृथ्वी को नवजीवन प्रदान करेगी,

तो सार्वजनिक सुख, अभ्युदय और आनन्द का युग आरम्भ होगा। यह आग एक भट्ठी में थी, जिसे आर्यसमाज कहते हैं। यह आग भारतवर्ष के परम योगी दयानन्द के हृदय में प्रज्वलित हुई थी।"

इसमें कोई सन्देह नहीं कि महर्षि दयानन्द एक महान् सूक्ष्मदर्शी, दिव्य द्रष्टा, युग पुरुष थे। मानवजाति की धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक चेतना को जागृत करने के लिए अपने घर-परिवार को भी तिलाञ्जलि देकर वाणी, व्यवहार और लेखनी से असत्य-अज्ञानता से लोहा लिया। प्रजातन्त्र शासन पद्धति के आधार पर आध्यात्मिकता से परिपूर्ण धर्म संस्कृति की आधारशिला पर राष्ट्रीयता के सुन्दर सुदृढ़, अजेय दुर्ग के निर्माण की अभूतपूर्व योजना बनाई। "सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए " - जैसे सार्वभौम दस नियमों को बनाकर मानवता का महल खड़ा करने के लिए जिस समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने की, मौलाना जहूरबख्श ने उसका मूल्यांकन करते हुए कहा - "ऋषि दयानन्द विश्वामित्र अर्थात् विश्व के मित्र थे। उनका प्रेम सार्वभौम था। उनके हृदय में सब के लिये महान् प्रेम था। ऋषि दयानन्द ने कब और कहां अन्य धर्मों पर घृणात्मक दृष्टि की है, मुझे तो इसका पता नहीं चलता। उन्होने यह तो कहीं नहीं कहा कि अमुक धर्म बुरा और घृणायोग्य है। अतः उस धर्म के अनुयायी उसे मानना छोड़ दें। उन्होने सत्यार्थ प्रकाश में अन्य-धर्मसम्बन्धी जिन ग्रन्थों की आलोचना की है -वह उनके विचार-स्वातन्त्र्य का सुन्दर उदाहरण है। विचार-स्वातन्त्र्य से घबराना कोरी कायरता है। यह ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश में स्वतन्त्र आलोचना की है, तो पुण्यकार्य ही किया है। अन्य विचार वालों को उस पर स्थिर-चित्त से विचार करना चाहिए। यदि ऋषि द्वारा बतलाये गये दोष ठीक जचें, तो प्रसन्नतापूर्वक अपने धर्म का संस्कार करें। उससे तो उन्नति ही होगी। ऋषि के हृदय में विश्व-प्रेम की विमल-धारा प्रवाहित हो रही थी। "वसुधैव-कुटुम्बकम्" उनकी प्रधान नीति थी।"

आर्यसमाज ने व्यक्तिवाद पर आधारित परम्परागत मान्यताओं को न मानकर वेद के आधार पर मानव को बुद्धि की कसौटी पर कसकर कोई निर्णय अथवा कार्य करने की प्रेरणा दी। यही कारण है कि पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने कहा - "स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं। संसार में मैंने केवल उन्हें ही गुरु माना है। आर्यसमाज मेरी माता है। इन दोनों की गोद में मैं खेला हूँ। मेरे हृदय और मस्तक दोनों को उन्होने गड़ा है। इन दोनों ने मुझे स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करना सिखाया है ... । आर्यसमाज ने मुझे कुर्बानी का मार्ग दिखलाया। आर्यसमाज ने मेरे अन्दर सत्य, धर्म और स्वतन्त्रता की रूह फूंकी। आर्यसमाज ने मुझे संगठन का पाठ पढ़ाया। आर्यसमाज ने शिक्षा दी कि समाज, धर्म और देश की सेवा करनी चाहिए और उनकी सेवा में जो मनुष्य अपना बलिदान करता है और दुःख उठाता है - उसे स्वर्ग का राज्य मिलता है।"

आर्यसमाज का संगठन लोकतन्त्र पर आधारित श्रेष्ठतम संगठन है। यही कारण है कि आजाद हिन्द फौज के सेनापति सुभाषचन्द्र बोस को एक बार कहना पड़ा -" संगठन, कार्य, दृढ़ता, उत्साह और समन्वयात्मकता की दृष्टि से आर्यसमाज की समता कोई समाज नहीं कर सकता।" आर्यसमाज ने देश-विदेश में अनेक परोपकार के कार्य किए। उनके उपकारों को ध्यान में रखते हुए सर एडवर्ड जलस मैकमेलन ने कहा - "आर्यसमाज राजनैतिक सभा या सोसायटी नहीं, परन्तु एक धार्मिक समाज है। आर्यसमाज बाल-विवाह का विरोधी, विधवा-विवाह का सहायक और स्त्री-शिक्षा का प्रचारक है। यह अनाथालय, पाठशालाएँ, चिकित्सालय और अनेक लाभदायक संस्थाएँ स्थापित करता है। आर्यसमाज का संगठन बहुत ही उत्तम है। उस पर यह दोष लगाया जाता है कि वह सामाजिक रुप से अपने सदस्यों की चेष्टाओं को राजकीय क्षेत्र में पूरी सहायता दे रहा है, परन्तु आर्यसमाज कोई राजनैतिक सभा या

सोसाईटी नहीं है।" स्वतन्त्रता से पूर्व संगठित रुप से जनता से सीधा सम्पर्क करने का श्रेय आर्यसमाज को देते हुए महात्मा गान्धी ने कहा - "ब्रिटिश राज्य स्थापित होने के पश्चात् जनता के साथ सीधा सम्पर्क रखने का मार्ग महर्षि दयानन्द ने खोज निकाला। इसका यश महर्षि दयानन्द और उनकी आर्यसमाज को प्राप्त है। महर्षि दयानन्द तथा उनकी आर्यसमाज ने प्रजा में नवचेतना पैदा की है। हिन्दू-समाज की अनेक कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न किया है। राष्ट्रीय शिक्षण, स्त्री-शिक्षा तथा दलितोद्धार आदि न भुलाई जा सकने योग्य राष्ट्र की महान् सेवा की है। मुझे आर्यसमाज बहुत प्रिय है।"

संकीर्ण भाव रखने वाले साम्प्रदायिक लोगों ने आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द को साम्प्रदायिक कहा। परन्तु, महर्षि दयानन्द के समकालीन अलीगढ़ युनिवर्सिटी के संस्थापक प्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैयद अहमद खाँ ने महर्षि दयानन्द की मृत्यु पश्चात ६ नवम्बर १८८३ को अलीगढ़ इन्सीट्यूट मैग्जीन में लिखा - "निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द ने जो संस्कृत के बड़े विद्वान् और वेदों के बहुत मुहुबिक्क (समर्थक) थे, ३० अक्टूबर ७ बजे शाम को अजमेर में इन्तकाल किया। इलावा इज्मो फाजल (उत्तम विद्या के अतिरिक्त) निहायत नेक और दरवेश-सिपत (साधु-स्वभाव) आदमी थे। इनके मोहतकिद (अनुयायी) इनको देवता मानते थे और वेशक वे इसी लायक थे। वे सिर्फ ज्योतिस्वरुप निराकार के सिवाय दूसरे की पूजा को जायज नहीं रखते थे। हमसे स्वामी दयानन्द मरहूम (स्वर्गीय) से बहुत मुलाकात थी। हम हमेशा इनका अदब किया करते थे कि हरेक मजहब वाले को इनका अदब लाजिमी (आवश्यक) था। बहरहाल वे ऐसे शक्स थे, जिनका मसाल (उपमा) इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है और हरएक शख्स को उनकी वफात (मृत्यु) का गम (शोक) करना लाजिमीहै कि ऐसा बेनजीर शख्स (अनुपम मनुष्य) इनके दरिमियान से (बीच से) जाता रहा।"

यूरोप के प्रसिद्ध वेदों के विद्वान् प्रोफेसर एफ. मैक्समूलर ने आर्यसमाज की सेवाओं का आदर करते हुए कहा- आर्यसमाज के आन्दोलन के प्रति मेरी पूर्ण सहानुभूति है। स्वामीदयानन्द ने विश्वहित के लिये कार्य किया है। आर्यसमाज के अनुयायियों को शान्त नहीं बैठना चाहिए, किन्तु स्वामी जी के उपदेशों को सफल बनाने के लिये प्रतिदिन अग्रसर रहना चाहिए। यदि मुझे आर्यसमाज की सेवाओं का सौभाग्य प्राप्त होगा, तो मैं अपने आप को भाग्यशाली समझूंगा।" आर्यसमाज के परोपकारों-गुणों की गरिमा को एक लेख में न्याय देना सम्भव नहीं है। अनेकों विद्वानों ने आर्यसमाज के विविध पहुलओं पर ग्रन्थ लिखे हैं। इस अवसर पर हम निःसंकोच कह सकते हैं कि जो कार्य आर्यसमाज ने एक शताब्दी में किया है - ऐसा काम अन्य किसी भी संगठन के अनेक शताब्दियों में भी नहीं किया। भूत सराहनीय था, भविष्य सुन्दर हो, इसके लिये आर्यसमाज के हर व्यक्ति को इस अवसर पर मानवमात्र की शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिये दृढ़ संकल्प लेकर कार्यक्षेत्र में कूद पड़ना चाहिए।

इस समय आर्यसमाज को १४३ वर्ष पूरे हो रहे हैं इस अल्पावधि में इस संस्थानें हर क्षेत्र में क्रान्ति के परचम लहराएँ हैं। संस्था के योगदान स्वयं इस बात के साक्षी हैं अपने गौरवमय अतीत वर्तमान की योजना बनाकर एक स्वर्णिम भविष्य का नवनिर्माण करना होगा। ऐसा काम अन्य किसी भी संगठन ने अनेक शताब्दियों में भी नहीं किया। भूत सराहनीय था भविष्य सुन्दर हो, इसके लिए प्रत्येक आर्य को अपनी योग्यता क्षमता के अनुरुप ऋषि के सपनों को साकार करने का आप्राण प्रयत्न करना होगा।

- आचार्य कर्मवीर

राष्ट्रीय

भारत की भौतिक उन्नति का मार्ग

– श्रीयश देवपुजारी

भारत के सामने हमारे पूर्व राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम ने २०२० तक विश्व की आर्थिक एवं सामरिक महाशक्ति बनने का लक्ष्य रखा है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने की क्षमता केवल आनेवाली पीढ़ी में है ऐसा मानकर वे बाल एवं युवकों को शिक्षा संस्थानों में जाकर प्रोत्साहित करते रहे हैं। किन्तु इस तरुणाई को सामुहिक रीति से किस मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए इस विषय में पर्याप्त मार्गदर्शन नहीं किया जा सका है। शासन में बैठा राजकीय दल या विपक्ष दोनों केवल आनेवाले चुनाव तक की सोच रखते हैं। तात्कालिक सोच के शिकार नौकरशाह केवल अपने कार्यकाल को चमकाने और उस आधार पर ऊँचा पद प्राप्त करने के जुगाड़ में लगे रहते हैं। यही कारण है कि लगभग दो लाख किसानों द्वारा आत्म हत्या करने पर भी देश के नीति निर्धारकों एवं योजनाओं को क्रियान्वित करने वाले तन्त्र की नींद टूटी नहीं है। ऐसे में समाज के सभी घटकों को इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु मार्ग निर्धारण के लिए आगे आना चाहिए।

विकसित देशों की कहानी –

विश्व के वर्तमान परिदृश्य पर दृष्टि डालें तो विश्व के २०४ देशों को सामान्यतः तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है। प्रथम श्रेणी का नाम है 'विकसित' दूसरी का 'विकसनशील' एवं तीसरी का 'अविकसित' रखा गया है। भारत विकसनशील देशों की श्रेणी में आता है। विकसित देशों की श्रेणी के अन्तर्गत एक छोटा गण बना है, जिसका नाम है जी-८। ये आठ देश सर्वाधिक प्रगत देश माने जाते हैं। इनके नाम है - अमेरिका, कैनडा, ब्रिटेन, फ्रान्स, जर्मनी, इटली, रशिया और जापान। इन देशों ने विज्ञान और तन्त्रज्ञान के आधार पर प्रगति की है। ये देश विश्व की मण्डी में नये-नये उत्पाद या तकनीक को बेचकर धनार्जन करते हैं। उदाहरण के लिए -

१. अमेरिका में सङ्गणक का निर्माण हुआ। उसे चलाने के लिए माईक्रोसाफ्ट ने विन्डोज नाम का साफ्टवेयर विकसित किया। तत्पश्चात् अन्तरताने (Internet) का आविष्कार किया। इन तीनों उत्पादों को विश्व में सभी देशों को बेचकर अमेरिका ने अत्यधिक पैसा कमाया।

२. जापान ने इलेक्ट्रानिक्स और वाहनों के स्तरीय उत्पादों से विश्व के बाजार भर दिये। आज भी सोनी, टोयोटा जैसे ब्राण्ड पूरे विश्व में अपनी धाक जमाये हुए हैं।

३. रशिया भारत को दीर्घकाल से शस्त्रों की आपूर्ति करता रहा है। चाहे पनडुब्बी हो या विमान वाहक जलपोत, हम रशिया पर निर्भर हैं।

उपर्युक्त परिपेक्ष्य में यदि हम भारत का विचार करें तो प्रश्न उठता है कि हमने किन उत्पादों को बेचकर पैसा कमाया। स्वतन्त्रता के पश्चात् हमने विज्ञान और गणित को मेट्रिक तक अनिवार्य विषय बनाया। इन दोनों विषयों की भाषा अंग्रेजी है ऐसा मान कर उसे अनिवार्य विषय के रूप में स्थापित किया। आज भारत के १०% लोग अंग्रेजी जानते हैं। हमने पर्याप्त मात्रा में तन्त्रज्ञ निर्माण किये हैं। किन्तु वैज्ञानिक कम ही उत्पन्न कर पाये। इतनी पूर्वसिद्धता के पश्चात् भी **हम ऐसी कोई वस्तु निर्माण नहीं कर पाये जिसे बेचने से हम धनवान बन सकें।** न हम विज्ञान के क्षेत्र में कोई मौलिक संशोधन कर पाये। हर वर्ष विज्ञान की विविध शाखाओं में नोबेल पुरस्कार वितरित किये जाते हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् किसी भारतीय नागरिक को विज्ञान का नोबेल पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ। हम केवल पश्चिम की नकल उतारते हैं। किसी नकलची को परीक्षा में किसी ने प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए देखा है ? जो मूल पश्चिम का ज्ञान है उसमें उनका अग्रणी बने रहना स्वाभाविक है। हमें उनके ज्ञान के आधार पर अग्रणी बनने के सपने को छोड़ देना चाहिए। क्या हमारे पास अपना भी कुछ है ?

भारतीय विज्ञान –

अंग्रेजों का भारत में पदार्पण होने के पूर्व भारत के विश्वविद्यालयों में कुल ६२ विषयों की पढ़ाई होती थी।

'जिस समाज या मानव समूह के पास ज्ञान होगा वही विकास करेगा।' यदि यह बात सच है तो हम विश्व में सबसे विकसित समाज बनकर उभरेंगे। इस मार्ग में जो एकमात्र बाधा है वह है संस्कृत भाषा। जितना शीघ्र हम उस भाषा को सीख पायेंगे उतना ही शीघ्र हम विकास पथ के अग्रणी राष्ट्र बनेगें। अतः आने वाले वर्षों में हमारे प्रगति का मूल मन्त्र होगा -

पठतु संस्कृतम्! लिखतु संस्कृतम्!! वदतु संस्कृतम्!!!

शिक्षा की भाषा संस्कृत होने के कारण इन विषयों के ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखे जाते थे। संस्कृत भाषा को आत्मसात करने पर हम इन ग्रन्थों को पढ़कर समझ सकेंगे। यदि हम ऐसा कर पायेंगे तो हमें विरासत में मिले ज्ञान भण्डार के द्वार खुल जायेंगे। जब हम भारतीय विज्ञान, अर्थशास्त्र, विधिशास्त्र की बात करते हैं तो लोग कहते हैं - **'मान लिया कि भारत का ज्ञान क्षेत्र पूर्व में विस्तृत था। किन्तु वर्तमान में उसका क्या उपयोग?'** ऐसा कहने वालों के लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

१. दिल्ली में आज की तिथि में पर्यटक अक्षरधाम देखने के लिए अधिक संख्या में पहुँचते हैं। उसे बनाने के लिए ७ हजार शिल्पी ५ वर्ष तक काम करते रहे। उनमें आधुनिक शिक्षा प्राप्त कोई नहीं था। उन भवनों और मन्दिरों की आयु भी आधुनिक भवनों से अधिक है। सुन्दरता, भव्यता और विशालता में भी उनका कोई सामना नहीं है। उस निर्माण में लोहा, सीमेन्ट (वज्रचूर्ण) बालु और गिट्टी का उपयोग नहीं हुआ है। संगमरमर के पत्थरों से बने उस निर्माण में जोड़ने वाला तत्त्व (binding force) क्या है, यह जानने का विषय है। क्या हमारा यह परम्परागत भवन निर्माण शास्त्र आज के स्थापत्य अभियन्ता (सिविल इंजीनियर) को सिखाना नहीं चाहिए ?

२. भारत में आधुनिक विज्ञान और संस्कृत दोनों को जानने वालों की संख्या अत्यन्त सीमित है। उनमें एक है डॉ. सी.एस.आर. प्रभु। वें National Informatics में सहायक महाप्रबन्धक हैं। उन्होने भास्कराचार्य द्वारा लिखित 'यन्त्रसर्वस्व' नाम के ग्रन्थ का अङ्ग रहे 'विमान शास्त्र' का अध्ययन प्रारम्भ किया और पाया कि विमानों के निर्माण हेतु उपयोग किये जाने वाले धातुओं का विवरण कुछ श्लोकों में संगृहीत है। उन धातुओं के निर्माण के प्रयत्न के फलस्वरूप उन्होने ५ नये मिश्र धातु बनाये जो वर्तमान विज्ञान जगत को ज्ञात नहीं है। उनमें से कुछ के यू.एस. पेटेन्ट भी उन्हें प्राप्त हैं। उन मिश्र धातुओं में से एक का भार तो अल्युमिनियम से भी हल्का है। यदि उस मिश्र धातु से विमान बनाया जायेगा तो स्वाभाविक उसका भार कम रहेगा और गति अधिक।

३. नागपुर स्थित नीरी नाम की (NEERI-National Environment Engineering Research Institute) केन्द्र सरकार की प्रयोगशाला पर्यावरण पर कार्य करती है। वहाँ के वैज्ञानिकों की एक टोली ने पानी की शुद्धता पर एक प्रकल्प हाथ में लिया। उस टोली में उन्होने एक स्थानीय आयुर्वेदिक वैद्य को जोड़ा। उस वैद्य ने उन्हें ९२वीं सदी के **चिन्तामणि नामक ग्रन्थ** से ६ श्लोक निकालकर दिये जिनमें पानी के शुद्धीकरण के उपाय बताये हैं। एक श्लोक में लवंग के द्वारा पानी का शुद्धीकरण कैसे होगा इसका विवरण दिया है। उस विवरण पर काम करने के कारण उन वैज्ञानिकों की टोली ने एक रसायन बनाने में सफलता प्राप्त की, जिसकी एक बूंद एक लीटर पानी को शुद्ध करती है। उस रसायन का यू.एस.पेटेन्ट भी भारत सरकार के नाम से प्राप्त किया गया है।

अर्थव्यवस्था -

आर्थिक समृद्धि का कारक जैसे विज्ञान है वैसे ही दूसरा कारण है अर्थव्यवस्था। आज विश्व को केवल दो अर्थव्यवस्था की धाराओं की जानकारी है। १. समाजवादी अर्थव्यवस्था और २ बाजारवादी अर्थव्यवस्था। अभी यह माना जाने लगा है कि साम्यवादी तत्वज्ञान आर्थिक समृद्धि लाने में असफल रहा है। इसलिए

साम्यवादी देश अब बाजारवाद की चपेट में आ गये हैं। भारत ने मिश्र अर्थव्यवस्था, समाजवादी, अर्थव्यवस्था और बाजारवादी अर्थव्यवस्था को आजमाकर देखा है। बाजारवादी अर्थव्यवस्था ने हमारे देश को दो पाटों में बाँट दिया है। एक है - सम्पन्न एवं मध्यम वर्ग का जो बाजारवाद से लाभान्वित है और दूसरा निर्धनों का। अर्थव्यवस्था की सफलता का मापदण्ड तो यही हो सकता है कि उचित अर्थप्रबन्धन के कारण गरीबी कम हो। गरीबों की संख्या का सही आकलन करने के अब तक कई प्रयास भारत में हुए। उनमें अन्तिम प्रयास अर्जुन सेन गुप्ता एवं तेदुंलकर समिति का रहा। प्रधानमंत्री द्वारा नियुक्त इन समितियों की रपट ने बाजारवाद के समर्थकों को निराश ही किया कारण निर्धनता की व्याख्याओं को मनोनुकूल बनाकर भी गरीबों की संख्या कम नहीं आँकी गयी।

हमने अपनी अर्थव्यवस्था को शेष विश्व से जोड़ दिया है। किन्तु गरीबों की संख्या के आकलन के लिए निर्धारित वैश्विक मानदण्डों को हम नहीं मानते। फिर भी जनसंख्या के ९७.६% गरीब भारत में रहते हैं ऐसा सरकार मानती है। इन्हें २० रुपये या उससे कम की आय पर प्रतिदिन गुजारा करना पड़ता है। विश्व बैंक का गरीबी का मापदण्ड डेढ़ डालर है। यदि उस कसौटी पर भारत को कसा जायेगा तो भारत की ८०% जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे आ जायेगी। क्या इस संख्या के आधार पर भारत को समृद्ध देश कहा जा सकेगा ? बाजारवाद के समर्थक यह कहते आये हैं कि यदि समाज का एक हिस्सा सम्पन्न होगा तो उसके कारण अन्य भी लाभान्वित होंगे। इसे **'ट्रिकल डाऊन थेयरी'** कहा गया। हमारे देश में बाजारवाद का प्रारम्भ १९९० में हुआ। अब २० वर्ष गुजर चुके हैं। ट्रिकल डाऊन थेयरी कहीं कारगर होती दिखाई नहीं दे रही है।

इतिहासकालीन भारत -

इतिहासकाल में भारत की समृद्धि का वर्णन सभी विदेशी यात्रियों ने अपने-अपने यात्रा वृत्तान्तों में किया है। इसीलिए भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। यहाँ के समृद्धि के आकर्षण से ही भारत पर आक्रमणों का दौर निरन्तर चलता रहा। प्रारम्भ ग्रीकों ने किया। तत्पश्चात् हूण, शक, कुषाण, मुगल, तुर्क, पठाण, पोर्तुगीज, फ्रेञ्च एवं अन्त में अंग्रेजों ने भारत की लूट जारी रखी। यदि हम निर्धन होते तो भला कोई क्यों हम पर आक्रमण करता ? विकसित देशों का एक संगठन है OECD। उस सङ्गठन ने ई.एस. शून्य से ई.स. २००० वर्ष तक का आर्थिक इतिहास लिखकर जालपुटपर (website) डाला है। उसमें केवल २२ देशों का आर्थिक इतिहास सम्मिलित है, जो इस पूरे काल तक जीवित रहें। उन २२ देशों में ई.स. २००० इस कालखण्ड में सर्वाधिक सकल घरेलू उत्पाद भारत का ही रहा है। इ.स. १७०० में भारत का सकल घरेलु उत्पाद विश्व की तुलना में ४०% था, जो आज किसी भी समृद्ध देश का नहीं है। इसका सीधा अर्थ यहीं निकलता है कि हमारे देश में एक सुदृढ़ अर्थव्यवस्था रही होगी, जिसका वर्णन तत्कालीन साहित्य में हमें स्थान स्थान पर मिलता है। उस व्यवस्था का परिशीलन कर यदि उसके कालानुरूप अंशों के आधार पर युगानुकूल नयी व्यवस्था हम बनाते हैं तो उसमें केवल भारत का ही नहीं तो विश्व का कल्याण निहित है।

संस्कृत ही उपाय -

उपर्युक्त उदाहरणों से यह निश्चित रीति से कहा जा सकता है कि हमारे पूर्वजों ने हमारे लिए छोड़ी धरोहर वर्तमान युग में भी उतनी ही उपयोगी है। उस ज्ञान सागर से ज्ञान रूपी अमृत निकालकर हम तो ज्ञान क्षेत्र में अग्रणी राष्ट्र बन सकते हैं। पश्चिम का ज्ञान हमने सीख ही लिया है। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहनसिंह द्वारा नियुक्त ज्ञान आयोग ने अपने रिपोर्ट में स्पष्ट लिखा है कि 'जिस समाज या मानव समूह के पास ज्ञान होगा वही विकास करेगा।' यदि यह बात सच है कि हम विश्व में सबसे विकसित समाज बनकर उभरेंगे। इस मार्ग में जो एकमात्र बाधा है वह है संस्कृत भाषा। जितना शीघ्र हम इस भाषा को सीख पायेंगे उतना ही शीघ्र हम विकास पथ के अग्रणी राष्ट्र बनेंगें। अतः आने वाले वर्षों में हमारे प्रगति का मूल मन्त्र होगा -

पठतु संस्कृतम्! लिखतु संस्कृतम्!! वदतु संस्कृतम्!!!

पता - झण्डेवाला माता मन्दिर गली, नई दिल्ली-११००५५

परीक्षा में अधिक अंक लाने के उपाय

छात्रों के लिए कुछ स्वर्णिम सूत्र

- स्वामी शान्तानन्द सरस्वती
(एम.ए. दर्शनाचार्य)

परीक्षा हाल में उत्तर कैसे लिखे :-

१. प्रश्न पत्र मिलते ही सबसे पहले सभी प्रश्नों को पढ़ना।

२. सभी प्रश्नों के उत्तर स्मरण हो तो भी अति उत्साह में अथवा अति शीघ्रता में उत्तर न लिखना।

३. किसी प्रश्न का उत्तर स्मरण न हो तो भी दुःखी-हताश-निराश न होना।

४. जिस प्रश्न का उत्तर पूर्णतया याद हो उसे पहले लिखना।

५. जिस प्रश्न का उत्तर भूल रहे हों, अथवा स्मरण न आता हो उसे सोच-सोच कर या याद करते करते लिखने में समय बरबाद न करके उसे सबसे अन्त में लिखे।

६. जिस प्रश्न का उत्तर पूर्ण रुप से याद ही न हो अर्थात उसके विषय में थोड़ा भी याद न हो उसका उत्तर सबसे अन्त में जैसा भी समझ में आये वैसा अवश्य लिखें।

७. कोई भी उत्तर कोरा बिना लिखे मत छोड़े। सभी प्रश्नों को हल करें।

८. हर उत्तर के पूर्ण होने पर उसके नीचे लम्बा अंडर लाइन करें।

९. खाली स्थान भरते हैं तो उत्तर के नीचे (जो भरे हों) अंडर लाइन करें।

१०. वस्तुनिष्ठ उत्तर लिखने में समझदारी करें। जल्दीबाजी न करें या कन्फ्यूजन में सही निशान न लगायें।

११. यदि सात प्रश्न हों और उनमें से कोई पांच उत्तर लिखने को कहा जाय तो जिन पांच प्रश्नों का उत्तर ठीक ठीक आता हो उसे ही लिखना।

१२. प्रत्येक उत्तर को साफ साफ व शुद्ध लिखना।

१३. नकल करके नहीं लिखकर अपने अकल से लिखना।

१४. प्रत्येक उत्तर के समय का विभाजन करके लिखना।

१५. अधिक अंक के उत्तर में अधिक समय लगाना व कम अंक के उत्तर में कम समय लगाना। बड़े उत्तर को कई पैराग्राफ बनाकर लिखना।

१६. कभी भी ऐसा न हो कि किसी प्रश्न का उत्तर याद हो फिर भी समय का अभाव हो जाये और उसे लिख न पायें।

१७. अंत अंत में समय कम पड़ता हो तो लिखने का स्पीड बढ़ा देना।

१८. उत्तर लिखने के काल में उत्तर के अतिरिक्त अन्य किसी विषय में न सोचना।

१९. सभी प्रश्नों का उत्तर लिख लेने के बाद अंत में कापी चेक करना।

२०. कोई उत्तर छूट गया हो या कहीं किसी वाक्य शब्द की कमी रह गयी हो तो उसकी पूर्ति करना अथवा कहीं कोई मात्रा की गलती हो तो उसे सुधार लेना व समय पर कापी अध्यापक को सौंप देना। परीक्षा समाप्ति घंटी के बाद भी लिखते न रहना।

परीक्षा की तैयारी कैसे करें :-

१. सभी विषयों के सभी पाठों की पूरी पूरी तैयारी करना केवल आई.एम.पी. नहीं पढ़ना अपितु कोई भी प्रश्न कहीं से भी आ जाय उसकी तैयारी रहनी चाहिए।

२. जो विषय कठिन हो उसमें अधिक समय लगाना उससे जी मत चुराना।

३. जो पाठ याद किये हों उसे दूसरों को सुनाकर पक्का करना।

४. यो याद किये हों उसे लिखकर भी देखना कहीं कोई मात्रा की गलती या स्पेलिंग मिस्टेक तो नहीं हो रही है।

५. यदि एक माह परीक्षा बची हो तो सभी विषय के लिये समय बांट देना व जिस विषय में परीक्षा के दौरान छुट्टी कम हो उसमें अधिक समय लगाना तथा जिसमें छुट्टी ज्यादा हो उसमें कम समय लगाना।

६. परीक्षा के आसपास के दिनों में खेलकूद, टी.वी., फिल्म, घूमना-फिरना, सैर सपाटा आदि में समय व्यर्थ न गंवाकर पढ़ाई में पूरा जोर लगाना।

पता : वैदिक गुरुकुल आश्रम भवानीपुर,
तह.-अबढासा, जिला-कच्छ (गुजरात)

सैद्धान्तिक वानप्रस्थाश्रम की उपादेयता

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति, एम.ए.

भारतीय समाज रचना के मूल तत्वों में 'वर्णाश्रम' व्यवस्था अतिमहत्वपूर्ण है । वर्णाश्रम व्यवस्था इतनी लचीली भी नहीं कि एक साधारण से झटके से टूट जाय और न इतनी कठोर है कि इससे समाज ही छिन्न-भिन्न हो जाय । वर्ण-व्यवस्था व्यक्ति की अभिरुचि, स्वभाव एवं जीविकोपार्जन की विधा पर निर्भर है, क्योंकि यह कर्म पर आधारित है। जन्म से हम सभी मनुष्य (नर-नारी) है, किन्तु समाज के चुसमकोण अर्थात् शिक्षा, रक्षा, पोषण और सेवा में सन्तुलन रखना बहुत आवश्यक है। भारतीय संस्कृति में 'आरक्षण' की न तो आवश्यकता है और न व्यवस्था रंक से लेकर राव-राजा तक सभी स्त्री-पुरुष की समाज में समान इकाई है । सभी को विकास और उन्नति का समान अवसर दिया जाता है। किशोरावस्था पार कर जब जीविका के लिए क्षेत्र का चयन आचार्य/राजा द्वारा होता है सभी 'वर्ण' की स्थापना और घोषणा होती है। आचार्य कुल में सभी को श्रेष्ठ संस्कारों से श्रृंगारित किया जाता है, इस कारण ब्राह्मण से लेकर शूद्र (श्रमहारा वर्ग) आदि सभी बराबर तथा समाज व्यवस्था के पूरक हैं, सहयोगी हैं। अर्वाचीन काल में यह सुन्दर व्यवस्था शिथिल पड़ गई और समाज छिन्न-भिन्न हो गया। इस पतन का सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक कारण रहे हैं। इस पतन का अभिशाप या प्रतिसाद यह समाज अभी भी भोग रहा है।

पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था के लिए भारतीय मनीषियों ने गृह्यसूत्र ग्रंथ एवम् नीति शास्त्रों की रचना की, जिनके अनुसार परिवार और समाज निरन्तर आगे बढ़ते गये । किन्तु इन सबका अंतिम छोर 'मा अमृतात्' रहा । अर्थात् मृत्यु के आवागमन से छुड़ाकर अमृतरस का पान करने की अंतिम इच्छा रही । इसका प्रथम छोर 'नावयानम्' से प्रारम्भ होकर एकेश्वरवाद से प्रारम्भ किया गया। *(स्व. दीक्षानन्द के अनुसार)*

श्रम प्रधान सामाजिक रचना

गृह्य सूत्रों के अनुसार पारिवारिक जीवन में आठ (८) और साठ (६०) आयु के वर्ष अत्यधिक महत्वपूर्ण माने गये हैं। अर्थात् बालक/बालिका को आठ वर्ष की आयु के पूर्व यज्ञोपवीत संस्कार, गुरुकुलों की ओर उन्मुख कर दिया जाता था। यहीं से ब्रह्मचर्याश्रम प्रारम्भ होता था। गृहस्थाश्रम में ५०-६० वर्ष की आयु के पश्चात् अनुभवपूर्ण वृद्धावस्था की ओर कदम बढ़ाते परिवार के प्रमुख को आत्म-कल्याण हेतु घर छोड़कर वन में एकांत समाधि द्वारा आनन्द ही नहीं अपितु परमानन्द प्राप्ति का अवसर दिया जाता था। इस व्यवस्था में भी स्त्री/पुरुष का कोई भेद नहीं था। भारतीय दर्शन के अनुसार आत्मा की यह व्यवस्था की गई है –

नैष स्त्री न पुमानेष न चैवायं नपुंसकः ।
यद्यच्छरीरमादत्ते तेन तेन स युज्यते ॥

अर्थात् शरीर में विद्यमान आत्मा न पुल्लिंग है और स्त्रीलिंग अथवा नपुंसक लिंग। आत्मा तो बस आत्मा ही है। कर्म-फल भोगने के लिए भिन्न लिंगों वाला यह शरीर आवरण के रूप में आत्मा को प्राप्त हो जाता है। इससे भी आत्मा न तो स्त्री होती और न हो पुल्लिंग। प्रत्येक आत्मा को उन्नति के चरम पर पहुंचने का पूर्ण अधिकार है। विषय वस्तु को आगे बढ़ने के पूर्व एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त पर प्रकाश डालने का लोभ संवरण नहीं हो पा रहा है। संसार का स्वरूप शीर्षक के अन्तर्गत कहा गया है-

'माता-पिता की सेवा करना, सांसारिक कर्त्तव्यों का निर्वहण तथा ऊँचे आदर्शों व सफलताओं को प्राप्त करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। परन्तु मोहवश उसी में आसक्त होकर भगवान को ही भुला देना अपनी आत्मा के उद्धार के लिए कुछ न कुछ करना, यह बहुत ही अनुचित है। वास्तव में इस संसार में कोई किसी का नहीं होता।' इसलिए इस दीर्घकालीन यात्रा के प्रथम पड़ाव ब्रह्मचर्याश्रम, तत्पश्चात गृहाश्रम और तृतीय पड़ाव में वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश कर

सुख आनन्द और परमानन्द

गृहाश्रम के पूर्व ब्रह्मचर्याश्रम का अपना महत्त्व है। सामान्य शब्दों में गृहाश्रम केवल सुखधाम है जिसे भगवान राम और योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र ने भी भोगा था। इसके पश्चात् वानप्रस्थाश्रम की अलौकिक छटा है। यह आश्रम एक तरह से वैकल्पिक है। परन्तु जो सुख से श्रेष्ठ आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें वानप्रस्थ अवश्य होना चाहिए। परन्तु जीवन का उद्देश्य इससे भी बढ़कर है। सुख के पश्चात् आनन्द तथा आनन्द के पश्चात् परमानन्द प्राप्त करना हमारा अंतिम लक्ष्य है। संन्यासाश्रम में प्रविष्ट होने, कासाय वस्त्र धारण करने, शिखा-सूत्र को त्याग कर संसार की सभी वस्तुओं का विन्यास कर और दृढ़ संकल्प कर संन्यासाश्रम में प्रवेश करना ही श्रेयस्कर होगा। इसी अंतिम आश्रम में परमात्मा की गोद में बैठकर योग-साधना, यम-नियम से.....समाधि, द्वारा परमानन्द का आस्वादन किया जा सकता है।

- लेखक

आत्मा को अमृतामुनि अथवा 'मा अमृतात' की ओर ले चलना चाहिए।

क्या वानप्रस्थाश्रम अनिवार्य है ?

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार - **ब्रह्मचर्याश्रम समाप्यगृ ही भवेद, गृही भूत्वा वनी भवेद्वनी भूत्वा प्रव्रजेत ॥(शत. क्र. ११४)** अर्थात् ब्रह्मचर्याश्रम के पश्चात् गृहाश्रम में प्रवेश तथा गृहाश्रम में प्रवेश के पश्चात् वनोनुभाव से वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करें। यह सामाजिक व्यवस्था वैदिक कालीन है। इसमें भी व्यक्ति की योग्यता, मानसिक क्षमता तथा तीव्र इच्छा शक्ति की ओर संकेत किया गया है। प्रत्येक गृहस्थ को इस आश्रम में प्रवेश करने या न करने की पूरी छूट है। हाँ, इतना अवश.य है कि गृहाश्रम के सुख के बाद जो इन्द्रियातीत आनन्द लेना चाहते हैं, तत्पश्चात् समाधि द्वारा चरम-आनन्द अथवा परमानन्द लेना चाहते हैं, वे क्रमशः वानप्रस्थ तथा फिर संन्यासाश्रम में प्रवेश करें। इस संबंध में यह विचार करना चाहिए कि यह सामाजिक व्यवस्था, भारतीय वैदिक समाजशास्त्र के अनुसार थी। भूत के पश्चात् वर्त्तमान पर और फिर भविष्य पर भी चिन्तन कर लेना चाहिए। वर्त्तमान में वैयक्तिक, पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक व्यवस्थाओं के आमूल-चूल परिर्वतन हो गया है। इसमें केवल उत्साहवश कोई निर्णय लेना प्रशस्य नहीं माना जा सकता। इस पर गहनता से विचार कर अन्तिम निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है।

वानप्रस्थाश्रम की प्रकृति और स्वरूप -

जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है कि शास्त्रों में गृहस्थाश्रम के बाद वन में जाते हैं और वहीं एकान्त में आराधना करने का विधान है। वस्तुतः ज्ञान के सच्चे अर्थ में घर गृहस्थी छोड़कर निर्जन वन में जाने और वहीं अराधना करने का महत्व दिया जाता रहा हो, पर सच्चे अर्थ में उपराम अवस्था में वानप्रस्थाश्रम है। **विदेहावस्था ही वास्तविक वानप्रस्थाश्रम है। इसमें घर गृहस्थी छोड़कर कहीं जाना नहीं है। बल्कि यहाँ रहकर कमल-पुष्प के समान आत्मा को पवित्र-निर्मल बनाने का साधन करना होता है। इसमें देह की स्मृति (अहंकार) से परे जाकर उससे विस्मृत होकर आत्म स्थिति में स्थित होना होता है।** देव (विनाशी) आत्मा अविनाशी का गेह-घर-निवास है। देह के लौकिक संबंध, सम्पर्क और उसके आकर्षणों से मुक्त होना ही वानप्रस्थाश्रम है।

गृहस्थाश्रम में रहते विदेहीपन (अविनाशीपन) का अहसास विस्तार को सार में समेटना है। यही निराकारी अवस्था है। बोधरहित न्यारेपन की अनुभूति। व्यक्ति जब सिम्पल (सादा-सात्विक) और सेम्पल (आदर्श-मूर्त्तमान) निर्लोभी, निरअहंकारी, सत्य का अनुरागी बनने लगे, रियल (वास्तविक, शुद्ध सात्विक) और रॉयल (श्रेष्ठतम) परमपिता के गुणों को धारण करने लगे, तो समझो वानप्रस्थ हो रहा है। वह उसी में सदा हर्षित रह औरों को हर्षित रखेगा, गुणों और वरदानों से भरपूरता के आभास से। शुभ-चिंतन मनन में मग्न वह हद के आकर्षणों से अनासक्त, बेहद शक्तियों के प्रति असक्त, आंतरिक शांति वन में स्थित होगा। वह सांसारिक बुराईयों में उपराम, निन्दा, स्तुति से दूर, तमाम नकारात्मकता को नकारेगा। संसार में वह निर्भय

विचारेगा, अपने को निमित्त मान बेफिक्र भी रहेगा।

एक सच्चा अनासक्त, राग-द्वेष से परे, एकान्तवादी, मन-वाणी-कर्म में संयमी, मिथ्या अहंकार-त्यागी, निर्मल, शान्त, दृढ़ निश्चयी, नष्टमोह, प्रपंच परित्यागी होता है, अर्थात् सब में समभावी, निष्काम कर्मऔर परमात्मा की याद में सदा धारायें परिलक्षित होती हैं, इनका अनुशीलन भी जरूरी है।

स्वाध्याय के अन्तर्गत वेदों में वानप्रस्थी अथवा संन्यासी ये भावपूर्ण शब्द उपलब्ध नहीं हो सके। परन्तु पर्याय के रूप में 'वनी' और 'यति' शब्दों का उपयोग अनेक स्थानों पर पढ़ने को मिला। वनी के 'अनि' शब्द भी पर्याप्त भाव प्रकट करता है। गृहस्थाश्रम में न्यासी के रूप में कर्मरत मनुष्य अपनी क्षमता और तीव्र इच्छा शक्ति के कारण विन्यासी अर्थात् संन्यासी बनता है, तो उसका आत्मा की उच्चकोटि की अवस्था का दर्शन है। कुल मिलाकर वैदिक सामाजिक-व्यवस्था के अन्तर्गत वनी अथवा यति होना प्रगति के क्रमिक तृतीय और चतुर्थ चरण हैं। इन्हीं चरणों में परम साधना, आनन्द से परमानन्द, समाधि अवस्था का शाश्वत सुख संभव है।

प्राचीनकाल की तरह न तो वनों में गुरुकुल है और न अन्य वानप्रस्थी ही कहा जाता है कि वानप्रस्थ इन गुरुकुलों में गृहस्थाश्रम में पके-पकाये, पूर्ण परिपक्व, अनुभवपूर्ण, जीवन के उत्थान-पतन की लहरों का सामना किये हुए ये वानप्रस्थ शिक्षा प्रदान का कार्य करते थे। इससे गुरुकुलों में योग्य अध्यापक या उपदेशकों का अभाव कभी भी नहीं होता था। सम्प्रति देश में अनेक गुरुकुल और वानप्रस्थाश्रम है। यहां यह भी एक विचारणीय तथ्य है कि कितने वानप्रस्थ बालक/बालिकाओं के गुरुकुलों में शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। ठीक है, यह एक सुन्दरतम वैदिक सामाजिक व्यवस्था है, इसका अनुशीलन और परिपालन गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर तीव्र इच्छावश शक्ति एवं अनुकूल स्थितियों को ध्यान में रखकर अवश्य होना चाहिए। 'समरथ को नहिं दोष गुसाई' के अनुसार सक्षम तथा अर्थ शक्ति सम्पन्न इस ओर अग्रसर हो सकते हैं, परन्तु सेवा-निवृत्त के पश्चात् भी किसी निजी संस्थान को सेवा देने के इच्छुक क्या सफल वानप्रस्थ हो सकते हैं ? आज समाज को श्रेष्ठ वानप्रस्थ, श्रेष्ठ अतिथि तथा वीतराग आर्य सन्यासियों की नितान्त आवश्यकता है। ऐसे ही 'श्रेष्ठ' त्यागी, वैरागी तथा आत्म निष्ठ लोग वर्त्तमान विकृत समाज को व्यवस्थित करने में सफल हो सकते हैं। क्या इस समस्या का हल हमारे वर्त्तमान वानप्रस्थ, पीताम्बर वेशधारी वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन इस ओर सकारात्मक तथा रचनात्मक कदम बढ़ाने का प्रयास करेंगे ?

पता : सुकिरण, अ/१३, सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

गुरुत्वाकर्षण के सर्वप्रथम अन्वेषक न्यूटन नहीं ?

गुरुत्वाकर्षण बल के बारे में हम सभी जानते होंगे कि इस शक्ति के कारण ही पृथिवी सभी पदार्थों को अपनी ओर आकर्षित करती है और कहा जाता है कि यूरोपवासी **ऐसेकन्यूटन** ने सर्वप्रथम इसको जाना, तब से यह विद्या पृथ्वी पर फैली है तथा कुछ लोग यह भी जानते हैं कि न्यूटन से भी हजारों वर्ष पूर्व गुरुत्वाकर्षण की खोज भास्कराचार्य जी ने की थी। ये दोनों ही बातें यथार्थ नहीं है। इसका प्रमाण यह है कि **भास्कराचार्य जी** द्वारा प्रणीत **सिद्धान्तशिरोमणि** नामक ग्रन्थ में भास्कराचार्य जी ने स्वयं एक प्राचीन भारतीय आचार्य का श्लोक उद्धृत किया है जो गुरुत्वाकर्षण बल को भलीभांति बतला रहा है। जो इस प्रकार है कि **आकृष्टशक्तिश्च मही तया यत् खस्थं गुरु स्वाभिमुखीकरोति। आकृष्यते तत्पततीव भातिसमे समन्तात् कुरियं प्रतीतिः ॥** अर्थात् सर्वपदार्थगत एक आकर्षण शक्ति विद्यमान है, जिस शक्ति से यह पृथ्वी आकाशस्थ पदार्थ को अपनी ओर करती है और जो यह खींच रही है वह गिरता मालूम होता है अर्थात् पृथिवी अपनी ओर खींच कर आकाश में फेंकी हुई वस्तु को ले आती है, इसको लोक में गिरना कहते हैं। इससे विस्पष्ट है कि भास्कराचार्य से बहुत पूर्व यह विद्या देश में विद्यमान थी। ***वैदिक विज्ञान पृ. २१ (लेखक - पं. शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ)***

प्रसारक : गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ (उ.प्र.)

ज्वलन्त प्रश्न अब करना होगा इनका इलाज

- डॉ. रवि प्रभात

काफी समय से राष्ट्रीय विमर्श से गायब रहे नक्सली सुकमा में लगातार हमलों के बाद चर्चा के केन्द्र में हैं। नक्सलवादियों की यही रणनीति है कि बीच-बीच में इस तरह की क्रूर हिंसात्मक गतिविधियों द्वारा देश को झकझोरते रहो। नक्सली इस तरह के क्रियाकलापों द्वारा जहां सरकार के खिलाफ अपनी अनैतिक लड़ाई को जीवित एवं सक्रिय दिखाना चाहते हैं, वहीं अपने शहरी सफेदपोश थिंकटैंक को भी अपनी क्षीण होती शक्ति का एहसास न होने देने का प्रयास करते हैं। नक्सलवादियों की शैतानी हरकतों पर पर्दा डालने के लिए छदम् बुद्धिजीवी (जिन्हें शहरी नक्सली कहना ज्यादा उचित होगा) भिन्न-भिन्न तरह सैद्धान्तिक मुखौटे पहनने का स्वांग भरते हैं। ये लोग सरकारी खर्चों पर सेमिनार करके, प्रेसवार्ता करके, नक्सलियों के साहित्य का वितरण करवाकर, उनके लिए सहानुभूति बटोरकर, विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा अपने इस कुत्सित अभियान को अंजाम देते हैं।

आम भारतीय जनमानस को इस विषय में बेहद सतर्क और जागरुक रहने की आवश्यकता है। नक्सलवादी सिद्धांतविहीन है। ये लोग अपने नापाक सिद्धान्तों की आड़ में जनजातीय महिलाओं के यौन शोषण को अंजाम दे रहे हैं, जनता से अवैध धन उगाही करना इनका प्रमुख धंधा है। बूढ़ों-बच्चों को अपनी ढाल बनाकर पूरे क्षेत्र में स्वघोषित तानाशाही के जरिये अकूत धन संपत्ति एकत्रित करना चाहते हैं।

नक्सलियों का एक ही ध्येय वाक्य है, सत्ता बंदूक की नली से निकलती है अर्थात् इनकी दृष्टि में हिंसा से ही सत्ता प्राप्ति संभव है। इसीलिए ये शहरी आकाओं की सरपरस्ती में अपने सिद्धान्तों को गढ़कर भारतीय शासन के खिलाफ अनैतिक लड़ाई लड़कर अपने ही लोगों का खून बहा रहे हैं। ये लोग खुद को जिनका हमदर्द दर्शाते हैं, उन्हीं वनवासियों का भरपूर शोषण करते हैं और यह सब शहरों में बैठे तथाकथित बुद्धिजीवियों के इशारे पर हो रहा है। शहरी नक्सलियों का खूंखार नक्सलियों से संबंध भी अब तो प्रमाणित होने लगा है। दिल्ली वि.वि. के जी.एन. सांईबाबा को सजा मिलना इसका उदाहरण है, जो नक्सलियों के थिंक टैंक के तौर पर लंबे समय से राजधानी में रहकर सक्रिय था। अभी भी कई ऐसे तत्व हैं जो अंदर ही अंदर तंत्र को तोड़ने का काम कर रहे हैं।

रोचक जानकारी

१. विश्व का सबसे अमीर देश स्वीट्जरलैण्ड है।
२. सऊदी अरब में एक भी नदी नहीं है।
३. विश्व का सबसे दानी आदमी अमेरिका का राकफेलर हैं, जिसने अपने जीवन में सार्वजनिक हित के लिए लगभग ७५ अरब रुपये दान में दिए।
४. सबसे महंगी वस्तु यूरेनियम है।
५. दक्षिण आस्ट्रेलिया में आयर्स नामक पहाड़ी प्रतिदिन अपना रंग बदलती है .
६. विश्व में रविवार को छुट्टी सन् १८४३ से शुरु हुई थी।
७. सारे संसार में कुल मिलाकर २७९२ भाषाएँ हैं।
८. फ्रांस ऐसा देश है जहां मच्छर नहीं होते हैं।
९. दक्षिण अफ्रीका में कोबरा नामक वृक्ष के पास इंसान के जाते ही उसकी डालियां उसे जकड़ लेती है और तब तक नहीं छोड़ती जब तक वो प्राण न त्याग दे।
१०. नार्वे देश में सूरज आधी रात में चमकता है।

धार्मिक क्रान्ति के सूत्रधार-स्वामी दयानन्द

– हरेन्द्र राय (एडवोकेट)

स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' के **स्वमन्तव्यामन्तव्य** प्रकाश में स्पष्ट किया है कि मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूँ जो तीनों काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरी कोई कल्पना या मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य उसी को मानना और जो असत्य है, उसको छोड़कर और छुड़वाना अभीष्ट है।

प्राचीन वैदिक धर्म-संस्कृति एवं सभ्यता परम्पराओं की पुनः स्थापना करना स्वामी का उद्देश्य रहा है कि सत्य सनातन धर्म या पौराणिकों, उनके अनुयायियों में जो अवैदिक विचारधारा का प्रादुर्भाव हो चुका था, जिसके कारण भारत की धार्मिक रीति अत्यन्त दुर्बल हो चुकी थी। स्वामी दयानन्द ने इन धार्मिक कुरुतियों एवं बाह्याडम्बरों के विरुद्ध धार्मिक क्रांति का सूत्रपात किया तथा वेद के सूत्रानुसार **'संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्'** अर्थात् सारे मिलकर चलें, साथ बोलें और सभी के मन एक हों, तभी राष्ट्र में सुख-शांति तथा उन्नति संभव है। उसके समकालीन लगभग ७० से ऊपर देशी मत-मतान्तर तथा ४० के लगभग विदेशी धर्म सम्प्रदाय स्थित थे। उन्होंने इन समस्त धर्म सम्प्रदायों तथा मत-मतान्तरों की सत्यार्थ प्रकाश में समीक्षा करते हुए खंडन किया है तथा पाखंडवाद की पोल खोली। स्वामी दयानन्द ने स्पष्ट किया कि वैदिक धर्म प्राचीन धर्म है जो वेदों पर आधारित है। वेद ईश्वरकृत है। ज्ञान-विज्ञान के भंडार हैं। स्वयं स्वामी जी ने वेदों का भाष्य करते हुए जनसाधारण के समक्ष स्पष्ट किया और धार्मिक भ्रांतियां दूर की, इससे एक नई धार्मिक क्रांति का सूत्रपात हुआ जिसके कर्णधार स्वामी दयानन्द बने। क्योंकि सं. १२०० के लगभग देश में भक्ति आन्दोलन जोरों का रहा, जिसके प्रमुख स्वामी शंकराचार्य, चैतन्य महाप्रभु, तुकाराम, नामदेव, बल्लभाचार्य, कबीर एवं नानक प्रमुख रहे। किन्तु यह सभी लोग सत्य सनातन धर्म उद्धार न कर सके। इस कारण स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में तर्क सहित समीक्षाएँ प्रस्तुत की हैं।

इसी मध्ययुगीन काल में इस्लाम धर्म का जोर रहा है। उलेमाओं और शासकों द्वारा 'इस्लाम या मृत्यु' का ऐलान किया गया जिससे हिन्दू पौराणिक धर्म लड़खड़ा गया। इस काल में इस्लाम की छत्रछाया में सूफी धर्म, चिश्ती समुदाय व अन्य पीर-पैगम्बरों के समुदाय भी खड़े हो चुके थे जिसकी समीक्षा स्वामी जी ने समुल्लास १४वें में स्पष्ट किया है तथा इन सभी मजहबों को अवैदिक घोषित किया है। स्वामी जी के समकालीन ब्रिटिश साम्राज्य का जोर था, जिसके कारण ईसाई धर्म पनप रहा था तथा अन्य विदेशी धर्म कन्फ्यूशियस का धर्म जो चीन देश का था, बोलबाला हो चुका था। जिसके साथ-साथ पारसी धर्म, यहूदी धर्म भी फैल चुके थे लेकिन इन सबसे प्रमुख ईसाई धर्म बन चुका था। देश की जनता इस धर्म की ओर आकर्षित हो रही थी। स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के १३वें समुल्लास में ईसाई मत की समीक्षा को स्पष्ट किया और उसके गुण-दोषों का वर्णन किया जिससे जनमानस में ईसाई धर्म का स्पष्टीकरण हुआ और वैदिक धर्म पल्लवित होने लगा।

इसके साथ-साथ देश में चार्वाक, जैन और बौद्ध धर्म का भी जोर था। जो नास्तिकवाद पर आधारित रहे। स्वामी जी ने नास्तिकवाद के विरुद्ध जबरदस्त कार्य किया और सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास द्वारा इस नास्तिकवाद के विरुद्ध समीक्षा प्रस्तुत की। उन्होंने घोषणा की कि **नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्** अर्थात् जब वृक्ष का मूल ही काट दिया जाये तो फल-फूल कहां से होंगे, वृह १०/१३, आगे यह बात भी सत्य है कि स्वार्थी दोषं न

पश्यति अर्थात् स्वार्थी लोग अपने स्वार्थ सिद्ध करने में दुष्ट कर्मों को भी श्रेष्ठ मानते हैं, दोष नहीं मानते हैं। यही स्थिति भारत में प्रचलित समस्त मत-मतान्तरों तथा धर्मों की रही जिससे देश की धार्मिक नीति का कुठाराघात हुआ।

परमपिता परमात्मा की कृपा से भारत भूमि पर स्वामी दयानन्द का आविर्भाव हुआ जिन्होने अपनी समस्या से भारत के खोये हुए गौरव को पुनः स्थापित किया और १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना करते हुए उसके १० नियम व उद्देश्य निर्मित किया जिसका लाभ भूमंडल का मानव लेने हेतु सक्षम है जिसकी अनिवार्य आवश्यकता है चूंकि विश्व-शांति एकता और अखंडता का आधार मात्र आर्यसमाज है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नारा देकर विश्व का कल्याण किया है। स्वामी दयानन्द निश्चय ही धार्मिक क्रांति के सूत्रधार रहे तो इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में चमक रहे हैं। कविवर नाथूराम शंकर ने स्पष्ट किया है कि -

जो न हटा मुख फेर, बढ़ा जीवन भर आगे,
जिसका साहस देख, सब विघ्न भय संकट भागे।
सबल सत्य की हार अनृत की जीत होगी,
ऐसे प्रबल विचार सहित विचारा जो योगी ॥

नई दिल्ली

विपत्तियों, बाधाओं और असफलताओं से घबराना और निराश होना उचित नहीं क्योंकि इनसे हमारी क्षमता और योग्यता की परीक्षा होती है। जैसे कसौटी पर कसने, घिसने, काटने और आग में तपकर हथौड़ी से कूटने पर सोने की परीक्षा होती है वैसे - संघर्ष, पराक्रम, धैर्य, साहस और शील-चरित्र से हमारी परीक्षा होती है।

कविता

गला घुट रहा कैसे कह दूँ ...?

रोज पसारे हाथ यहाँ पर भूखा खड़ा सवाल है।
गला घुट रहा कैसे कह दूं देश मेरा खुशहाल है।

❀

धर्म-समाधि मौन अचानक उल्टे पांव खड़ा है
ईमान आज यह बेईमानी की खोटी नजर चढ़ा है
व्यर्थ हीनता के कीचड़ में गूंगा मनुज मड़ा है
अकर्मण्यता की बांहो में नंगा कर्म पड़ा है
भूल गये सब ज्ञान की गीता सोच रहा नन्दलाल है
गला घुट रहा कैसे कह दूं देश मेरा खुशहाल है

❀❀

लंगड़ी बहरी जर्जर सत्ता उठती पड़ती रहती है
दूसरी कुर्सियाँ विधवा जैसी सूनेपन को सहती है
अभिलाषा की अंधी आँखे कड़वे आंसू बहती है
रामराज्य की काली फाईल स्वप्न जमा करती है
आपस की आपा-धापी में शोषक माला-माल है
गला घुट रहा कैसे कह दूं देश मेरा खुशहाल है

❀❀❀

गीत खुशी का गूंजे कैसे पड़ा अधूरा छंद है
परेशानियों ने मिलजुल कर कुचल दिया आनंद है
आज मौत से सभी झोपड़ी कर बैठी अनुबंध है
साहूकार की मुट्ठी में अब सभी समस्या बंद है
मनुज गुलामीपन में डूबा जीवन हुआ मुहाल है
गला घुट रहा कैसे कह दूं देश मेरा खुशहाल है

कवि, लेखक, पत्रकार - **जगन्नाथ विश्व,**
मनोयल २५, एम.आई.जी. हनुमान नगर,
नागदा जंक्शन (भारत) पिन - ४५६-३३५

स्वास्थ्य चर्चा

- रसवैद्य डॉ. प्रेमदत्त पाण्डेय,
सम्पादक निरोगधाम,
जवारा कम्पाउण्ड, इंदौर, (म.प्र.)

ग्रीष्म ऋतु 'आदान काल' की चरम सीमा होती है याने इस काल में सूर्य पूरी तेजी पर होता है और उसकी प्रचण्ड किरणें संसार के जलीय अंश का शोषण करती है। जिससे नदी, तालाब, झील का पानी सूख जाता है, वृक्षों की हरियाली नष्ट होती है और प्राणियों के शरीर का जलीयांश भी कम होता है जिससे प्यास का अनुभव होता है , इस ऋतु में दो बातों का ख्याल सबसे ज्यादा रखना स्वास्थ्य-रक्षा के लिए जरुरी होता है। पहली बात, किसी भी कारण से शरीर में जलीयांश की कमी (Dehydration) नहीं होने पाये और दूसरी बात, पेट खराब न हो याने अपच और कब्ज की स्थिति न बनने पाये।

आहार - ग्रीष्म ऋतु में हमें ऐसा आहार करना चाहिए जिसमें मीठे (मधुर रस), शीतल प्रकृति के, चिकनाई वाले (स्निग्ध), रसीले पदार्थों को शामिल किया गया हो। मौसमी फलों का यथाशक्ति सेवन करना हितकारी होगा। नमकीन, खटाईयुक्त, कटु रस वाले तथा गरम प्रकृति के पदार्थ, तले हुए और तेज मिर्च मसाले वाले पदार्थ का सेवन जितना कम करें उतना अच्छा है। जो लोग धूम्रपान, मद्यपान, मांसाहार और मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं उन्हें ग्रीष्म ऋतु में कई प्रकार के कष्ट और रोग हुआ करते हैं। आप इन सबके सेवन से हमेशा दूर ही रहें। भोजन में हलके और सुपाच्य पदार्थों का ही सेवन करें। शाम के भोजन में दही, केला, बेसन की चीजें, अरबी, बेगन और तले पदार्थों का सेवन न करें। सम्भव हो सके तो रात को सोने से आधा घण्टा पहले, जबकि शाम का खाना खाये दो घण्टे हो चुके हों, एक गिलास दूध और १-२ चम्मच शुद्ध घी का सेवन करना चाहिए। इसके बाद कुल्ले करके मुंह साफ कर लें और आधा घण्टा कुछ काम या पढ़ाई लिखाई करें फिर सो जाएं। इन दिनों एसिडिटी (अम्लता) या हायपरएसिडिटी (अम्लपित्त) पेट में जलन, पेशाब में जलन, खूनी पेचिस, मुंह में छाले, कब्ज होना आदि व्याधियाँ गलत ढंग से आहार करने की वजह से ही होती है। ऐसी स्थिति में हो तो शाम के भोजन में कुछ दिन तक चावल एवं मूंग की दाल की खिचड़ी का ही सेवन करना चाहिए। भोजन के बाद दिन में एक बार Dumex कम्पनी का बना Becosule Capsule १५ दिन तक सेवन करें। दोनों वक्त के भोजन के बाद दो चम्मच झण्डू पंचारिष्ट समभाग पानी में मिला कर पीयें। प्रत्येक कौर खूब अच्छी तरह चबा कर ही निगला करें। चाय, सिगरेट, तम्बाकू खाने वालों को ऐसी शिकायतें अक्सर हुआ करती है। आप इनका सेवन करना शुरु ही न करें तो जीवन भर इनके जहरीले प्रभाव से बचे रहेंगे। दिन में घण्टे-घण्टे या आधा घण्टे से १-१ गिलास मीठा नीबू पानी (शिकंजी) या कोई मीठा शरबत पीना चाहिए। एक गिलास ठण्डे पानी में जरा सी ग्लूकोज घोल कर पीने से घबराहट कम होती है और शरीर में चुस्ती फुर्ती मालूम होती है। सत्तू को मीठा और पतला करके सेवन करना भी हितकारी होता है। दोपहर बाद फलों में पके तरबूज, खरबूजा, सन्तरा, हरी नरम ककड़ी, केला आदि कोई भी एक मौसमी फल जरुर खाना चाहिए। फ्रीज में रखा पानी पीने की आदत न डालें। पीना चाहें तो थोड़ी देर तक बाहर रख कर उसकी ठण्डक कम करके पिया करें। फ्रीज का पानी पीने से गले में खराश, टांसिल्स में दर्द, सर्दी, जुकाम और अपच होने की शिकायतें होती है। मटके या सुराही का पानी पीना ही श्रेष्ठ है। ग्रीष्म ऋतु में उड़द की दाल सरसो का साग, सरसों का तेल, खट्टा खासा दही, लहसून, शहद, बेसन के पदार्थ और ज्यादा उष्ण प्रकृति के पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। कच्चा नारियल और इसका पानी, सौंफ, मिश्री मक्खन आदि सेवन करना हितकारी होता है।

ग्रीष्म ऋतु में भूख से एक रोटी कम ही खाना

अच्छा होता है ज्यादा खाना नहीं, इसलिए इन दिनों अधिक मात्रा में भोजन न करना ही अकलमन्दी है। कम खाएँ लेकिन खूब चबाकर खायें तो ज्यादा गुणकारी होता है। ज्यादा मात्रा में खाकर हजम न कर पाने से, थोड़ी मात्रा में खाकर अच्छी तरह हजम कर लेना अच्छा होता है। भोजन के अन्त में एक डकार आती है। यह डकार आते ही भोजन बन्द कर देना चाहिए। डकारते जाना और खाते जाना उचित नहीं। एक मोटा सिद्धान्त याद रखें कि कम खाना और गम खाना स्वास्थ्य की रक्षा करने वाले काम है। गर्मी के दिनों में सुबह उठ कर दांत मुंह साफ कर शौच जाने से पहले ठण्डा पानी पीना और रात को सोते समय मीठा दूध पीना हितकारी होता है। हो सके तो सुबह के पानी में नीबू निचोड़ कर और रात के दूध में १-२ चम्मच घी डाल कर सेवन करना चाहिए। यह उपाय कब्ज और पेट में बढ़ी हुई गर्मी नष्ट करता है।

विहार - इन दिनों तेज, धूप, गरम हवा और ज्यादा गरमी से बचाव करना चाहिए। घर से बाहर निकलें तो एक गिलास ठण्डा पानी पी कर निकले और सिर को तेज धूप से बचाने का उपाय करके निकलें ऐसा करने से लू नहीं लगती। इन दिनों यात्रा करना हो तो २-४ बताशे और देहरादून वाली अमृतधारा या इन्दौर वाली प्राण सुधा साथ रखें। कभी जी मचलाए, उल्टी जैसा जी करे, सिर दर्द हो तो २-४ बूंद दवा बताशे पर टपका कर खा लेने से तुरन्त आराम होता है। रात अगर देर तक जागना पड़े तो दस बजे के बाद हर घण्टे से १-१ गिलास पानी पीना चाहिए। इससे वात और पित्त कुपित नहीं हो पाते। बाहर से घर लौटने पर थोड़ी देर विश्राम करके पानी पीना चाहिए। लेकिन ग्रीष्म ऋतु में विशेषकर प्यास के वेग रोकना नहीं चाहिए। **शोषांग सादबा बाधिर्य सम्मोह भ्रम हृदयगदाः**- के अनुसार प्यास के वेग को रोकने याने पानी न पीने से मुंह सूखना, अंगों में शिथिलता, बहरापन, मूर्च्छा जैसी आना, चक्कर आना और हृदय को पीड़ा होना आदि परिणाम होते हैं।

इन दिनों सुबह जल्दी उठकर नित्यकर्मों से निवृत्त होकर विद्या अध्ययन करना और सूर्योदय से पहले थोड़ी दूर तक दौड़ना या टहलना चाहिए। स्वास्थ्य की रक्षा करने वाला यह बेजोड़ और मुफ्त का उपाय है। सुबह सूर्योदय से पहले वायुमण्डल शान्त, शुद्ध, निर्विकार और प्राणवायुयुक्त होता है। इस वक्त वायु सेवन करने से हमारे फेफड़े शुद्ध और बलवान रहते हैं जिससे फिर दिन भर के दूषित और विषाक्त वायु मण्डल का हमारे फेफड़ों पर असर नहीं हो पाता और हम दिन भर चुस्त-दुरुस्त तथा फुर्तीले (Smart) बने रहते हैं। ख्याल रहे, इस नियम का पालन करने में आलस्य व लापरवाही कदापि न करें। याद रखें, सुबह जल्दी उठना तप है और रात को देर तक जागना ताप है। ग्रीष्म काल में प्रातः स्नान के बाद ही योगासन या हलका व्यायाम करें। दौड़ने कूदने और झटके से उठने बैठने वाले व्यायाम करते समय जांघिया या लंगोट पहनना चाहिए ताकि अण्डकोष (Scrotum) को झटका न लगे। व्यायाम हलका और कम मात्रा में ही करें जरूर। योगासन या व्यायाम करना शरीर को मजबूत और स्वस्थ रखने वाला मुफ्त का उपाय है। ●

मेरे मुक्तक

माहौल बिगाड़ने की सियासत न कीजिए,
गंगा-जमुनी तहजीबें तोड़ने की
जुर्रत न कीजिए।
सदियों से कष्ट सहे हैं मेरे मुल्क हिन्दुस्तान ने
अब और नफरत के खूनी कांटे मत बोईए॥
सब कुछ भारत माता तेरे लिए,
कुछ नहीं बाकी मेरे लिए।
ये जान-जिस्म तेरे चरणों में अर्पण -
आती-जाती हर सांस तेरे लिए॥
जय हिन्द कहूंगा,
भारत महान् लिखूंगा।
गर्व है अपने तिरंगे पर
तन-मन-धन अर्पित करूंगा॥

- मुकेश कुमार वर्मा

विचारात्मक

वेद प्रचार की दुन्दुभि

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

वेद प्रचार की दुन्दुभि सदैव बजती रहेगी न रुकी है न कभी रुकेगी। बहुत से नये कार्यकर्त्ता आर्यसमाजों में आते जाते हैं, उनमें से अनेक सज्जन तो स्वाध्याय कर अपने आप को आर्यत्व के रंग में ढाल लेते हैं। अनेक नहीं ढाल पाते हैं, अनेक सोचते हैं कि हमें आर्यसमाज से कोई लाभ मिले। उनकी क्रूर दृष्टि आर्यसमाज से धर्नाजन करने की रहती है। केवल पदों के लिए ही भागदौड़ करते हैं। उन्हें वेद प्रचार कार्य से कोई सम्बन्ध नहीं रहता।

आर्यसमाज कोई धनार्जन करने का स्रोत नहीं यह तो व्यक्ति समाज व राष्ट्र की उन्नति हेतु एक क्रान्ति है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने आर्यसमाज के दस नियमों में छठे नियम में स्पष्ट लिखा है कि **"संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना।"** इससे आर्यसमाज का दायित्व संसार के लिए हो जाता है, अर्थात् मानव मात्र की उन्नति हेतु मानव ही नहीं पशुओं, वनस्पति, पृथ्वी, आकाश सभी के लिए है। इसीलिए तो वेद में कहा है **"ओ३म् द्यौ शान्ति पृथिवी शान्ति औषधयः शान्ति वनस्पतयै शान्ति...।"** अर्थात् आकाश पृथिवी औषधि वनस्पति आदि सभी से शान्ति हो इस प्रकार सभी की स्थिति को सामान्य रखने हेतु प्रार्थना है। आकाश पृथिवी आदि सभी हमारे जीवन को सुख देने वाले हों। हमें अपने व अपने परिवार, समाज एवं सभी की श्रेष्ठता के लिए कार्य करना चाहिए। संसार की सेवा करना हमारा उद्देश्य होना चाहिए और ऋषि ने जो कार्य आरम्भ किया था, वह कभी नहीं रुक सकता।

अनेक महानुभाव कहते भी है कि अब आर्यसमाज के कार्यों की आवश्यकता नहीं, यह सोच एक दम ठीक नहीं क्योंकि मनुष्य व समाज में विकृतियां आती ही रहती है और उन्हें अलग करना आर्यों का उद्देश्य है, जैसे कि कृषि की भूमि में फसल उगाई जाती है तो खरपतवार भी होती है। खरपतवार को अलग करना होता है। नहीं तो खरपतवार फसल को बर्बाद कर देगी। आर्यसमाज का भी यही दायित्व है समाज में संस्कारों की कमी, पाखण्ड, अन्धविश्वास व अनेक विकृतियां, नये-नये प्रकार से जन्म लेती है और उनको दूर करने हेतु कोई न कोई श्रेष्ठ पुरुष भी आगे आते रहते हैं, जो कि कम ही होते हैं और असामाजिक कार्य करने वालों से पाखण्डियों से अन्धविश्वासों से लड़ते व संघर्ष करते रहते हैं। बुराईयों का विरोध करते हैं। राष्ट्र हेतु अपना बलिदान तक कर देते है।

गुरुदत्त, भगवद्दत्त, पं. लेखराम, महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) जैसे महान क्रान्तिकारी थे जिन्होने आर्यत्व की दुन्दुभि को उन्नति पर पहुंचाया और अपना जीवन समर्पित कर दिया। ऋषि दयानन्द ने आर्यों के कार्य को आगे बढ़ाया जबकि दुनियां के लोग वेदों को भूलते ही जा रहे हैं। चाणक्य जैसे महान् कुशल वेदज्ञ व नीतिज्ञ ने तीन-तीन चक्रवर्ती सम्राट बनाए अन्त में चाणक्य की हत्या कर दी गई। श्रीकृष्ण ने महाभारत में पाण्डवों का पक्ष ले संघर्ष किया वह वेदों के विद्वान् थे योगीराज। अब जबकि सहस्रों वर्षों से भारत की भूमि आक्रान्ताओं से रक्त रंजित हो रही थी। बप्पारावल, राणा सांगा, उदयसिंह और महाराणा प्रताप जैसे शूरवीरों ने अपना राजपाट जीवन सब मातृभूमि हेतु बलिदान कर दी। अंग्रेजों से वीर सावरकर, चाफेकर बन्धु, नेता जी सुभाषचन्द्र बोस, रानीलक्ष्मीबाई,

भगतसिंह, सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे महान क्रान्तिकारियों ने मातृभूमि हेतु बलिदान किया। ऐसे समय जब देश अंग्रेजों की दासतां से त्रस्त था। ऋषि दयानन्द ने इस भारत भूमि पर जन्म लिया हालांकि दुनियां जानती थी कि अंग्रेजों के कितने अत्याचार यहां हो रहे थे, इससे पूर्व मुगल तुर्क पठान यूनानी आक्रान्ताओं के दंश इस भारत भूमि ने सहे, परन्तु जो इसका मूल था स्वतन्त्रता व भारत के चक्रवर्ती शासकों के होने का मूल था वह ऋषि दयानन्द ने ही बताया कि हमारे जो चक्रवर्ती शासक थे हमारे यहां जो ज्ञान विज्ञान था जो तक्षशिला नालन्दा जैसे विश्वविद्यालय थे, जिसके कारण विदेशी यहां ज्ञान व धनार्जन तथा व्यापार हेतु आते जाते थे। विश्व के राजा यहां की आज्ञा का भी पालन करते थे। इतना महान् होने का मन्त्र केवल वेद में है। यह ऋषि दयानन्द की नवभारत के निर्माण में विशेष देन है। ऋषि दयानन्द ने इसीलिए तो गुरुकुलों की शिक्षा पर ध्यान दिया संस्कार व वर्ण एवं आश्रम व्यवस्था पर बल दिया। वैदिक शिक्षा पर बल दिया वेद प्रचार को विश्व की उन्नति का मार्ग बताया और वेद से ही संसार की उन्नति हो सकती है। वेद ही हमारा मनुष्य मात्र का धर्म है अन्य सब मत मतान्तर है। वेद का ही प्रचार कर हम संसार को उन्नति के मार्ग पर चला सकते हैं। आर्यसमाजों का यही दायित्व है जब तक दुनियां रहेगी आर्यसमाजों और आर्यों का दायित्व रहेगा।

पता : गली नं. २, चन्द्रलोक कालोनी,
खुर्जा-२०३१३१

चलते रहे कदम तो
किनारा जरूर मिलेगा।
अन्धकार से लड़ते रहे,
सबेरा जरूर खिलेगा।
जब ठान लिया मंजिल पर
जाना, रास्ता जरूर मिलेगा।

आयुर्वेद का सन्देश

पथ्ये सति गदार्त्तस्यकिमौषधनिषेवणैः।
पथ्येऽसति गदार्त्तस्य किमौषधनिषेवणैः॥ (लोलिम्बराज)

भावार्थ - आयुर्वेद विज्ञान की वैज्ञानिकता का इससे बढ़कर भला और क्या उदाहरण हो सकता है कि - जीवन रक्षा के सिद्धान्तों की जहाँ विवेचना ऋषि महर्षियों द्वारा की गयी है, वहाँ खुला चैलेन्ज देकर यह कहा है कि - यदि मनुष्य पथ्य (खान-पान, रहन-सहनादि में) पूर्णतया रखे तो फिर भला औषधियाँ सेवन करने की उसे आवश्यकता ही क्या? इस बात को आधुनिक विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया है कि - खान-पान आहार-विहार चित्त वृत्तियों का स्वास्थ्य से गहरा सम्बन्ध है। अतः पथ्य का पालन समग्रतया करना चाहिए। और यदि मनुष्य अपने ऊपर संयम रख ही नहीं सकता है तो पुनः औषधियाँ व्यर्थ है। लाख दवाइयाँ आप ले लीजिये, परन्तु पथ्याभाव के कारण आप कदापि लाभान्वित नहीं हो सकते हैं। आयुर्वेद के इस सुस्वास्थ्य विषयक सन्देश पर आज भारतवर्ष के सभी नागरिकों को विचार करने की नितान्त आवश्यकता है।

– सुभाषित सौरभ

पुण्य स्मरण

बलिदान दिवस ६ अप्रैल १९२९

हुतात्मा महाशय राजपाल की बलिदान-गाथा

• विश्वनाथ •

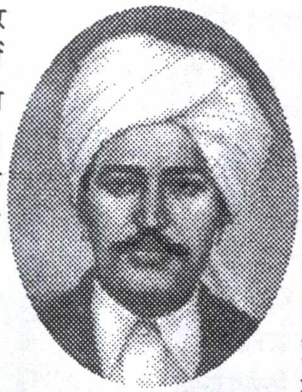

सन् १९२३ में मुसलमानों की ओर से एक पुस्तक उन्नीसवीं सदी का महर्षि प्रकाशित हुई। यह पुस्तक महर्षि दयानन्द का बहुत घिनौना तथाअपमानजनक चित्रण था। उन्हीं दिनों मुसलमानों ने श्रीकृष्ण महाराज के सम्बन्ध में भी एक आपत्तिजनक पुस्तक प्रकाशित की। पुस्तक का नाम था "कृष्ण, तेरी गीता जलानी पड़ेगी।" पुस्तक के नाम से ही समझ सकते हैं कि इसमें क्या था। महाशय, राजपाल, महर्षि दयानन्द और योगेश्वर कृष्ण का अपमान नहीं सकते थे। उन्होंने पुस्तक का उत्तर पुस्तक से देना उचित जाना। इन घिनौनी पुस्तकों का उत्तर देने के लिए १९२४ में 'रंगीला रसूल' प्रकाशित की।

यह पुस्तक उर्दू में थी जिसमें मुसलमानों के पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब की जीवनी व्यंग्यात्मक शैली में दी गई थी, परन्तु घटनाएँ सभी इतिहास-संमत और प्रामाणिक थीं। पुस्तक में लेखक के नाम के स्थान पर 'दूध का दूध और पानी का पानी' छपा था। वास्तव में पुस्तक के लेखक पं. चमूपति एम.ए. थे जो आर्यसमाज के श्रेष्ठ विद्वान् एवं बाद में गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य बने थे। वे महाशय राजपाल जी के अभिन्न मित्र थे, उनकी अनेक पुस्तकें राजपाल जी प्रकाशित कर चुके थे। मुसलमानों की ओर से सम्भावित प्रतिक्रिया के कारण चमूपति जी इस पुस्तक पर अपना नाम नहीं देना चाहते थे। उन्होंने महाशय राजपाल जी से यह वचन ले लिये कि चाहे कितनी भी विकट परिस्थिति क्यों न बने वे किसी को भी इस पुस्तक के लेखक के रूप में उनका नाम नहीं बताएँगे। महाशय राजपाल जी ने इस वचन की रक्षा अपने प्राणों की बलि देकर की। चमूपति जी पर जरा भी आँच नहीं आने दी।

सन् १९२४ में यह मुकदमा शुरू हुआ और सन् १९२९ में राजपाल जी का बलिदान हुआ। इन पाँच वर्षों में उन्हें अनेक बार यह कहा गया कि आप असली लेखक का नाम बता दें तो हमें आपसे कोई शिकायत नहीं रहेगी। यह बात उस जमाने के प्रमुख मुस्लिम दैनिक-पत्र जमींदार में प्रकाशित हुई परन्तु महाशय राजपाल जी ने एक ही बात दोहराई कि इस पुस्तक के लेखन तथा प्रकाशन की पूरी जिम्मेदारी मेरी ही है, अन्य किसी को नहीं। उन्होने जो वचन दिया उसे अन्त तक निभाया।

पुस्तक बिकती रही परन्तु उसके विरुद्ध कोई शोर न मचा। फिर महात्मा गांधी ने अपनी मुस्लिम-परस्त नीति में इस पुस्तक के विरुद्ध एक लम्बी टिप्पणी लिख दी। बस फिर क्या था, एक ओर कट्टरवादी मुसलमानों और मुल्लों ने राजपाल जी के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया, दूसरी ओर सरकार ने उसके विरुद्ध सन् १९२३ में १५३(अ) धारा के अधीन अभियोग चला दिया। अभियोग चार वर्ष तक चलता रहा। राजपाल जी को छोटे न्यायालय ने डेढ़ वर्ष का कारावास तथा एक सहस्र रुपये जुर्माने का दण्ड सुनाया गया। इस आदेश के विरुद्ध सैशन में अपील करने पर कारावास के दण्ड में एक वर्ष की कटौती कर दी गई। इसके पश्चात् अभियोग हाईकोर्ट में गया। हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश कँवर दिलीपसिंह ने महाशय राजपाल को ससम्मान दोषमुक्त कर दिया।

पहला प्रहार

मुसलमान इस निर्णय से भड़क उठे और उन्होने राजपाल जी के विरुद्ध जानलेवा आन्दोलन छेड़ दिया, जिसके फलस्वरुप २६ सितम्बर १९२७ को उन पर खुदाबख्श नामक एक मुसलमान ने उनकी दुकान पर जो हस्पताल रोड पर स्थित थी, प्राणघातक आक्रमण किया। आक्रमणकारी एक पहलवान था। उसके हाथ से महाशय राजपाल के जीवन की सुरक्षा की कोई आशा न थी। परन्तु मारने वाले से बचाने वाला महाबली होता है, यह लोकोक्ति इस प्रसंग में सत्य सिद्ध हुई और स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी

महाराज और स्वामी वेदानन्द जी जो दैवयोग से वहाँ उपस्थित थे, उन्होने घातक को ऐसा कसकर दबोचा कि वह अपने क्रूरतापूर्ण निश्चय में सफल न हो सका। तथापि महाशय राजपाल बहुत बुरी तरह घायल हुए। घातक के विरुद्ध अभियोग चला और उसे सात वर्ष के कारावास का दण्ड मिला।

स्वामी सत्यानन्द जी पर आक्रमण

महाशय राजपाल अपने घावों के कारण अस्पताल में ही थे कि उसी दुकान पर जिसमें महाशय राजपाल जी को घायल किया गया था, स्वामी सत्यानन्द जी बैठे थे। रविवार, ८ अक्टूबर १९२७ को अब्दुल अजीज नामक एक मुसलमान ने उन्हें महाशय राजपाल समझ कर पीछे से, एक हाथ से चाकू व दूसरे हाथ में उस्तरे से प्राणघातक प्रहार कर दिया। घातक स्वामी जी को घायल करके भागना ही चाहता था कि अद्‌भुत शौर्य का प्रदर्शन करते हुए पड़ोसी दुकान वाले महाशय नानकचन्द जी कपूर ने हत्यारे को पकड़ने का यत्न किया। इस प्रयास में वे भी घायल हो गए। उनकी पकड़ से घातक निकलना ही चाहता था कि महाशय नानकचन्द जी के छोटे भाई लाला चूनीलाल जी उस पर लपके और उसे पकड़ने का यत्न किया। उन्हें भी घायल करता हुआ हत्यारा भाग लिया परन्तु चौक अनारकली में उसे दबोच लिया गया। उसे चौदह वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड और तदनन्तर तीन वर्ष के लिए शान्ति की गारण्टी का दण्ड सुनाया गया।

अंतिम प्रहार :-

महाशय जी गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर गए हुए थे। वहाँ से पांच अप्रैल को लाहौर लौटे। ६ अप्रैल १९२९, शनिवार के दिन दोपहर के समय वे अपनी दुकान में आराम कर रहे थे। उनका एक कर्मचारी पुस्तकों को व्यवस्था से रख रहा था। इल्मदीन नामक एक मुसलमान युवक छुरा छिपाए हुए दुकान के भीतर आया। क्रूर हत्यारे ने आते ही लेटे हुए महाशय राजपाल जी के सीने में दोधारी छुरा घोंप दिया। वीर राजपाल जी का तत्काल प्राणान्त हो गया। हत्यारा अपनी जान बचाने के लिए बाहर भागा। महाशय जी का कर्मचारी भी शोर मचाता हुआ उसके पीछे दौड़ा। क्रूर हत्यारा भागकर महाशय सीताराम जी के लकड़ीटाल में जा घुसा। सीताराम जी के नवयुवक साहसी सपूत विद्यारत्न जी ने हत्यारे को कसकर अपनी भुजाओं में पकड़ लिया। इतिहास ने अपने आपको आज पुनः दोहराया। दिल्ली में अब्दुल रशीद ने वयोवृद्ध रुग्ण संन्यासी श्रद्धानन्द पर तीन गोलियाँ चलाकर भागने का प्रयत्न किया तो वीर धर्मपाल विद्यालंकार ने वहीं उसको धर दबोचा था जब तक पुलिस ने आकर उसको बन्दी न बना लिया।

अंतिम यात्रा :-

महाशय जी का पोस्टमार्टम तो उसी सायंकाल हो गया था परन्तु लाहौर के हिन्दुओं ने यह निर्णय लिया था कि अगले दिन हुतात्मा की शवयात्रा धूमधाम से निकाली जाए। पुलिस के मुसलमान अधिकारियों ने राज्याधिकारियों के मन में निराधार भय का भूत बिठा दिया कि यदि शवयात्रा निकली तो शहर में दंगा-फसाद हो जाएगा। डिप्टी कमिश्नर ने रातों-रात लाहौर में धारा १४४लगाकर सरकारी अनुमति के बिना जलसे-जुलूसों पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

शवयात्रा कैसी थी –

महाशय जी के बलिदान से आर्य हिन्दू-जाति में ऐसा जोश पैदा हुआ जो देखते ही बनता था। शवयात्रा के समय यह जोश देखकर सब में उत्साह का संचार हो रहा था। अनुमान लगाया गया कि पच्चीस हजार लोग शव-यात्रा में सम्मिलित होकर शमशान-भूमि पहुंचे थे। हिन्दुओं ने बड़ी श्रद्धा से अपने मकानों की छतों से हुतात्मा के शव पर पुष्प-वर्षा की। पंजाब के सुप्रसिद्ध पत्रकार व कवि, महाशय नानकचन्द जी नाज ने तब एक कविता लिखी थी जिसकी ये पंक्तियाँ उस समय के जोश का यथार्थ चित्रण करती है:

फख से सर ऊँचे आस्माँ तक हो गए,
हिन्दुओं ने जब तेरी अर्थी उठाई राजपाल।
फूल बरसाए शहीदों ने तेरी अर्थी पै खूब,
देवताओं ने तेरी जय जय बुलाई राजपाल।
हो हर एक हिन्दू को तेरी ही तरह दुनिया नसीब,
जिस तरह तूने छुरी सीने पै खाई राजपाल।
तेरे कातिल पर न क्यों इस्लाम भेजे लानतें,
जब मुजम्मत कर रही है इक खुदाई राजपाल।
मैंने क्या देखा कि लाखों राजपाल उठने लगे,
दोस्तों ने लाश तेरी जब जलाई राजपाल।

सौजन्य : राजपाल एण्ड सन्स, १५९०, मदरसा रोड,
पता - कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६

स्मरणीय सन् सत्तावन के महानायक : तात्या टोपे

(१८ अप्रैल बलिदान दिवस)

भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के एक प्रमुख सेनानायक थे। सन् १८५७ के महान विद्रोह में उनकी भूमिका सबसे महत्वपूर्ण, प्रेरणादायक और बेजोड़ थी। सन् ५७ के विद्रोह की शुरुआत १० मई को मेरठ से हुई थी। जल्दी ही क्रांति की चिन्गारी समूचे उत्तर भारत में फैल गयी। विदेशी सत्ता का खूनी पंजा मोड़ने के लिये भारतीय जनता ने जबरदस्त संघर्ष किया। उसने अपने खून से त्याग और बलिदान की अमर गाथा लिखी। उस रक्तरंजित और गौरवशाली इतिहास के मंच से झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब पेशवा, राव साहब, बहादुर शाह जफर आदि के विदा हो जाने के बाद करीब एक साल बाद तक तात्या विद्रोहियों की कमान संभाले रहे।

तात्या का जन्म महाराष्ट्र में नासिक जिले के निकट येवला नामक गाँव में एक देशस्थ ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता पाण्डुरंग राव भट्ट (मावलेकर) पेशवा बाजीराव द्वितीय के घरु कर्मचारियों मे से थे। बाजीराव के प्रति स्वामीभक्त होने के कारण वे बाजीराव के साथ सन् १८१८ में बिठूर चले गये थे। तात्या का वास्तविक नाम रामचंद्र पाण्डुरंग राव था, परन्तु लोग स्नेह में उन्हें तात्या के नाम से पुकारते थे। तात्या का जन्म सन् १८१४ में माना जाता है। अपने आठ भाई-बहनों में तात्या सबसे बड़े थे।

कुछ समय तक तात्या ने ईस्ट इंडिया कम्पनी में बंगाल आर्मी की तोपखाना रेजीमेंट में भी काम किया था, परन्तु स्वतंत्र चेता और स्वाभिमानी तात्या के लिए अंग्रेजों की नौकरी असह्य थी। इसलिए बहुत जल्दी उन्होने उस नौकरी से छुटकारा पा लिया और बाजीराव की नौकरी में वापस आ गये। कहते हैं तोपखाने में नौकरी के कारण ही उनके नाम के साथ टोपे जुड़ गया, परन्तु कुछ लोग इस संबंध में एक अलग किस्सा बतलाते हैं। कहा जाता है कि बाजीराव ने तात्या को एक बेशकीमती और नायब टोपी दी थी। तात्या इस टोपे को बड़े चाव से पहनते थे। अतः बड़े ठाट-बाट से वह टोपी पहनने के कारण लोग उन्हें तात्या टोपी या टोपे के नाम से पुकारने लगे। वह अजन्म अविवाहित रहे।

सन् १८५७ के विद्रोह की लपटे जब कानपुर पहुंची और वहां के सैनिकों ने नाना साहब को पेशवा और अपना नेता घोषित किया तो तात्या टोपे ने कानपुर में स्वाधीनता स्थापित करने में अगुवाई की। तात्या टोपे को नाना साहब ने अपना सैनिक सलाहकार नियुक्त किया। जब ब्रिगेडियर जनरल हैवलॉक की कमान में अंग्रेज सेना ने इलाहाबाद की ओर से कानपुर पर हमला किया तब तात्या ने कानपुर की सुरक्षा में अपनी जी-जान लगा दिया, परन्तु १६ जुलाई १८५७ को उसकी पराजय हो गयी और उसे कानपुर छोड़ देना पड़ा। शीघ्र ही तात्या टोपे ने अपनी सेनाओं का पुनर्गठन किया और कानपुर से बारह मील उत्तर में बिठूर पहुंच गये। यहां से कानपुर पर हमले का मौका खोजने लगे। इस बीच हैवलॉक ने अचानक ही बिठूपर पर आक्रमण कर दिया। यद्यपि तात्या बिठूर की लड़ाई में पराजित हो गये परन्तु उनकी कमान में भारतीय सैनिकों ने इतनी बहादुरी प्रदर्शित की कि अंग्रेज सेनापति को भी प्रशंसा करनी पड़ी।

तात्या एक बेजोड़ सेनापति थे। पराजय से विचलित न होते हुए वे बिठूर से राव साहेब सिंधिया के इलाके में पहुंचे। वहां वे ग्वालियर कन्टिजेन्ट नाम की प्रसिद्ध सैनिक टुकड़ी को अपनी ओर मिलाने में सफल हो गये। वहां से वे एक बड़ी सेना के साथ काल्पी पहुंचे। नवंबर १८८७ में उन्होने कानपुर पर आक्रमण किया। मेजर जनरल विन्ढल के कमान में कानपुर की सुरक्षा के लिए थी। ब्रिटिश सेना के प्रधान सेनापति सर कॉलिन कैम्पबेल ने तात्या को छह दिसंबर को पराजित कर दिया। इसलिए तात्या टोपे खारी चले गये और वहां नगर पर कब्जा कर लिया। खारी में उन्होने अनेक तोपें और तीन लाख रुपये प्राप्त किये जो सेना के लिए जरुरी थे। इसी बाच २२ मार्च को सर हयूरोज ने झांसी पर घेरा डाला। ऐसे नाजुक समय में तात्या करीब २०,००० सैनिकों के साथ रानी लक्ष्मीबाई

की मदद के लिए पहुंचे। ब्रिटिश सेना तात्या टोपे और रानी की सेना से घिर गयी। अंततः रानी की विजय हुई। रानी और तात्या टोपे इसके बाद काल्पी पहुंचे। इस युद्ध में तात्या टोपे एक बार फिर ह्यूरोज के खिलाफ हार का मुंह देखना पड़ा।

कानपुर, चारखारी, झांसी और कौंच की लड़ाईयों की कमान तात्या टोपे के हाथ में थी। चरखारी को छोड़कर दुर्भाग्य से अन्य स्थानों पर उनकी पराजय हो गयी। तात्या टोपे अत्यंत योग्य सेनापति थे। कौंच की पराजय के बाद उन्हें यह समझते देर न लगी कि यदि कोई नया और जोरदार कदम नहीं उठाया गया तो स्वाधीनता सेनानियों की पराजय हो जायेगी। इसलिए तात्या ने काल्पी की सुरक्षा का भार झांसी की रानी और अपने अन्य सहयोगियों पर छोड़ दिया और वे स्वयं वेश बदलकर ग्वालियर चले गये। जब ह्यूरोज काल्पी की विजय का जश्न मना रहा था, तब तात्या ने ऐसी विलक्षण सफलता प्राप्त की जिससे ह्यूरोज अचंभे में पड़ गया। तात्या का जवाबी हमला अविश्वसनीय था। उसने महाराजा जयाजी राव सिंधिया की फौज को अपनी ओर मिला लिया था और ग्वालियर के प्रसिद्ध किले पर कब्जा कर लिया था। झांसी की रानी, तात्या और राव साहब ने जीत के डंके बजाते हुए ग्वालियर में प्रवेश किया और नाना साहब को पेशवा घोषित किया। इस रोमांचकारी सफलता ने स्वाधीनता सेनानियों के दिलों को खुशी से भर दिया, परन्तु इसके पहले कि तात्या टोपे अपनी शक्ति को संगठित करते, ह्यूरोज ने आक्रमण कर दिया। फूलबाग के पास हुए युद्ध में रानी लक्ष्मीबाई १८ जून १८५८ को शहीद हो गयी।

इसके बाद तात्या टोपे को दस माह का जीवन अद्वितीय शौर्य गाथा से भरा जीवन है। लगभग सब स्थानों पर विद्रोह कुचला जा चुका था, लेकिन तात्या ने एक साल की लम्बी अवधि तक मुट्ठी भर सैनिकों के साथ अंग्रेज सेना को झकझोर रखा। इस दौरान उन्होने दुश्मन के खिलाफ एक ऐसे जबरदस्त छापेमार युद्ध का संचालन किया, जिसने उन्हें दुनिया के छापेमार योद्धाओं की पहली पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया। इस छापेमार युद्ध के दौरान तात्या टोपे ने दुर्गम पहाड़ियों और घाटियों में बरसात से उफनती नदियों और भयानक जंगलों के पार मध्यप्रदेश और राजस्थान में ऐसी लम्बी दौड़ी-दौड़ी जिसने अंग्रेज कैम्प में तहलका मचाये रखा। बार-बार उन्हें चारों ओर से घेरने का प्रयास किया गया और बार-बार तात्या को लड़ाईयां लड़नी पड़ी, परन्तु यह छापामार योद्धा एक विलक्षण सूझ-बूझ से अंग्रेजों के घेरों और जालों के परे निकल गया। तत्कालीन अंग्रेज लेखक सिलवेस्टर ने लिखा है कि हजारों बार तात्या टोपे का पीछा किया गया और चालीस-चालीस मील तक एक दिन में घोड़ों को दौड़ाया गया, परन्तु तात्या टोपे को पकड़ने में कभी सफलता नही मिली।

- आचार्य बलदेव, दयान्द परिसर, दुर्ग

शिकार हैं हम

पूछते हैं कहां के हैं हम
क्या कहें, कहीं के नहीं है हम
पता लापता नाम गुमनाम हैं हम
कश्मीर से खदेड़े, गोधरा में जलाये
अपने ही मुल्क में सताये
भारतीय हैं हम अपनों में बेगाने हैं हम ॥
मुस्लिम कहें काफिर हिन्दू कह पाकिस्तानी
सवर्ण कहें अछूत भूखे शिविरों में जीवन बिताते
राजनीतिज्ञों के मात्र वोट बैंक हैं हम
जाति, धर्म, प्रान्त और सरकार की
संख्या हैं हम ॥
व्यक्तिगत कुछ भी नहीं हमारा
न जीवन न मान न पहचान और न देश हमारा
पाये जाते हैं अक्सर मुजरिम के कठघरे
पुलिस की हवालात में
सरकार की जेलों में
हमें पता भी नहीं किस कुसूर की सजा में हैं हम।
हाँ जाति, धर्म के ठेकेदारों के शिकार हैं हम।

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा
पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगाँव
छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४८०००१

पुण्य स्मृति
प्रथम स्वातन्त्र्य समर के प्रथम शहीद - मंगल पाण्डे
(८ अप्रैल बलिदान दिवस)

मंगल पाण्डे एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होने १८५७ में भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वो ईस्ट इंडिया कंपनी की ३४वीं बंगाल इंफेन्ट्री के सिपाही थे। तत्कालीन अंग्रेजी शासन ने उन्हें बागी करार दिया जबकि आम हिंदुस्तानी उन्हें आजादी की लड़ाई के नायक के रुप में सम्मान देता है। भारत के स्वाधीनता संग्राम में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को लेकर भारत सरकार द्वारा उनके सम्मान में सन् १९८४ में एक डाक टिकट जारी किया गया। मंगल पाण्डेय का जन्म भारत में उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के नगवा नामक गांव में १९ जुलाई १८२७ को एक सामान्य सरायूपारीण ब्राह्मण परिवार में हुआ था। हालांकि कुछ इतिहासकार इनका जन्म स्थान फैजाबाद के गांव सुरहुरपुर को मानते हैं। इनके पिता का नाम दिवाकर पांडे था। मंगल पांडे सन् १८४९ में २२ साल की उम्र में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना में शामिल हो गए।

विद्रोह का प्रारम्भ एक बंदूक की वजहसे हुआ। सिपाहियों को पैटन १८५३ एनफील्ड बंदूक दी गयी जो कि ०.५७७ कैलीबर की बंदूक थी तथा पुरानी और कई दशकों से उपयोग में लायी जा रही ब्राउन बैस के मुकाबले में शक्तिशाली और अचूक थी। नयी बंदूक में गोली दागने की आधुनिक प्रणाली (फ्रिकशन कैप) का प्रयोग किया गया था परन्तु बंदूक में गोली भरने की प्रक्रिया पुरानी थी। नयी एनफील्ड बंदूक भरने के लिए कारतूस को दांतो से काटकर खोलना पड़ता था और उसमें भरे हुए बारुद को बंदूक की नली में भर कर कारतूस को डालना पड़ता था। कारतूस का बाहरी आवरण में चर्बी होती थी जो कि उसे पानी की सीलन से बचाती थी। सिपाहियों के बीच अफवाह फैल चुकी थी कि कारतूस में लगी हुई चर्बी सुअर और गाय के मांस से बनायी जाती है।

२९ मार्च १८५७ को बैरकपुर परेड मैदान कलकत्ता के निकट मंगल पाण्डेय जो दुगवा रहीमपुर (फैजाबाद) के रहने वाले थे रेजीमेण्ट के अफसर लेफ्टीनेंट बाग पर हमला कर के उसे घायल कर दिया। जनरल जान हेएरसेये के अनुसार मंगल पाण्डेय किसी प्रकार के धार्मिक पागलपन में थे जनरल ने जमादार ईश्वरी प्रसाद ने मंगल पाण्डेय को गिरफ्तार करने का आदेश दिया पर जमीदार ने मना कर दिया। सिवाय एक सिपाही शेख पलटु को छोड़कर सारी रेजीमेन्ट ने मंगल पाण्डेय को गिरफ्तार करने से मना कर दिया। मंगल पाण्डेय ने अपने साथियों को खुलेआम विद्रोह करने के लिये कहा पर किसी के ना मानने पर उन्होने अपनी बंदूक से अपनी प्राण लेने का प्रयास किया। परन्तु वे इस प्रयास में केवल घायल हुये। ६ अप्रैल १८५७ को मंगल पाण्डेय का कोर्ट मार्शल कर दिया गया और ८ अप्रैल को फांसी दे दी गयी।

- मुक्त ज्ञान कोष वीकिपीडिया से

रामाधार जी को "पत्नी शोक"

भिलाई। गत दिनांक २९ मार्च १८ को सायंकाल करीब ६ बजे छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा में स्थल निरीक्षक श्री रामाधार जी की धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रावती देवी का दुखद देहावसान हो गया। वे ५३ वर्ष की थी। पिछले कुछ समय से वे पक्षाघात का शिकार हो गई थी। जीवन व मृत्यु के बीच संघर्ष में मृत्यु आखिरकार विजयी हो गयी। ३० मार्च प्रातः ११ बजे दुर्ग स्थित शिवनाथ नदी के पावन तट पर सभा के धर्माचार्य पं. उद्धवशास्त्री जी के पौरोहित्य में सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य के निरीक्षण में उनकी टीम ने वैदिक विधि विधानानुसार पर्याप्त मात्रा में शुद्ध गाय का घी एवं सामग्री के द्वारा अन्त्येष्टि संस्कार मंत्रोच्चारण पूर्व सम्पन्न किया। इस अवसर पर आर्यजनों के साथ उनके परिजनों को मिलाकर करीब २ सौ लोगों ने शामिल होकर दिवंगता की शान्ति के लिए आहुतियां प्रदान कर प्रार्थना की। सभा प्रधान जी एवं अग्निदूत के सम्पादक आचार्य कर्मवीर शास्त्री, आचार्य बलदेव जी ने मृतका की सद्गति के लिए एवं परिवार को कष्ट सहन के सामर्थ्य के लिए प्रभु से कामना की। दो मिनट का मौन श्रद्धाञ्जलि के साथ शांतिपाठ हुआ। *- निजी संवाददाता कार्यालय*

प्रासंगिक

पृथ्वी बचाओ

जैसा कि हम सभी जानते है कि पूरे ब्रह्माण्ड में जीवन वाला एकमात्र ज्ञात ग्रह पृथ्वी है। इसलिए हमें पृथ्वी से जो कुछ भी प्राप्त होता है उसका सम्मान करना चाहिए और उन्हें बनाए रखना चाहिए। हमें धरती माँ की रक्षा करना चाहिए, ताकि हमारे भविष्य की पीढ़ियाँ सुरक्षित वातावरण में रह सकें। हम पृथ्वी की रक्षा पेड़ों, प्राकृतिक वनस्पति, पानी, प्राकृतिक संसाधन, बिजली आदि की रक्षा कर कर सकते हैं। हमें पर्यावरण प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करने वाले संभव प्रयासों का कड़ाई से पालन करना चाहिए। प्रदूषण खत्म करने और ग्लोबल वार्मिंग को खत्म करने के लिए, सभी को अपने आस-पास के क्षेत्रों में अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाने चाहिए। वानिकीकरण, पुनः वनोत्पादन, कागजों और अन्य प्राकृतिक पदार्थों का पुनः प्रयोग, प्राकृतिक संसाधनों (खनिज, कोयला, पत्थर, तेल आदि) बिजली, पानी और वातावरण को बचाना चाहिए, बढ़ावा देना चाहिए और समर्थन करना चाहिए।

हम पृथ्वी के अलावा पूरे ब्रह्माण्ड में ऐसे ग्रह को नहीं जानते है, जहां जीवन संभव हो। यह केवल अकेला ज्ञात ग्रह है, जहाँ सभी सबसे अधिक आवश्यक प्राकृतिक संसाधनों, ऑक्सीजन, पानी और गुरुत्वाकर्षण का संयोजन पाया जाता है, जो यहां जीवन को सफल बनाने की संभावना का निर्माण करता है। हमें इसके बारे में अधिक सोचने की आवश्यकता नहीं है और भविष्य की पीढ़ी को स्वस्थ पृथ्वी देने के लिए बहुत से प्रभावी तरीकों द्वारा गंभीरता से पृथ्वी की रक्षा करनी चाहिए। लोगों को पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन प्राप्त करने और वायु प्रदूषण व ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव को कम करने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। हमारे जीवन, वातावरण और विभिन्न प्रजातियों के घरों को बचाने के लिए हमें वनों को काटने से रोकना चाहिए। लोगों को बिजली का प्रयोग सीमित करना चाहिए और ग्लोबल वार्मिंग से वातावरण की रक्षा करने के लिए जीवाश्म ईंधन के प्रयोग को कम करना चाहिए। हमें पृथ्वी को विनाश से बचाने के लिए सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए। निम्नलिखित नियम (रिडीयूज, रियूज, रिसाइकिल) हमारी अनमोल धरती को बचाने में बहुत ही प्रभावी साबित हो सकते हैं।

पृथ्वी ब्रह्माण्ड में सबसे अनमोल वस्तु है, जो जीवन के लिए आवश्यक वस्तुएँ, ऑक्सीजन और पानी को रखती है। पृथ्वी पर पाये जाने वाले प्राकृतिक संसाधन दिन प्रतिदिन मानव के गलत कार्यों के कारण बिगड़ रहे हैं। इसने पृथ्वी पर जीवन को संकट में डाल दिया है। अनुकूल वातावरण की कमी के कारण बहुत से जंगली जानवर पूरी तरह से विलुप्त हो गए है। बहुत प्रकारके प्रदूषण ग्लोबल वार्मिंग और अन्य पर्यावरणीय मुद्दों पर हर दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। इसे नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए सभी गलत प्रचलनों को रोकना बहुत आवश्यक है। पूरे विश्व भव के लोगों के बीच में जागरुकता फैलाने के लिए पृथ्वी दिवस हर साल २२ अप्रैल को मनाया जाता है। यह वार्षिक रुप से पृथ्वी के प्राकृतिक पर्यावरण को बनाए रखने के साथ ही लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए मनाया जाता है। इसलिए हमें स्वार्थी नहीं होना चाहिए और हमें पृथ्वी पर रहने वाली सभी प्रजातियों के बारे में सोचना चाहिए। हमें अपनी पृथ्वी और वातावरण को अपशिष्टों, प्लास्टिक, कागज, लकड़ी आदि की मात्रा को कम करने के द्वारा रक्षा करनी चाहिए। हमें गंदगी और अपशिष्टों को कम करने के लिए कपड़े, खिलौने, फर्नीचर, किताबें, कागज आदि के पुनः प्रयोग की आदत डालना चाहिए। प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग के स्तर को बढ़ाने में शामिल गलत गतिविधियों को हमें रोकना चाहिए। हमें अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करने वाले पदार्थों के बारे में स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए।

सौजन्य : ऋषि आर्य, दुर्ग

७ अप्रैल विश्व स्वास्थ्य दिवस पर

नीरोग रहने के लिए कुछ उपयोगी सुझाव

- प्रतिदिन सूरज निकलने से पहले बिस्तर अवश्य छोड़ दें। रात में जल्दी सोने की आदत डालें, ताकि सुबह बिस्तर छोड़ने में आलस्य की अनुभूति न हो।
- सुबह-शाम खुली हवा में टहलें। ऐसा करने से पूरे शरीर की मांसपेशियाँ सक्रिय हो जाती है, चुस्ती-स्फूर्ति बढ़ती है और शरीर कई तरह के रोगों से सुरक्षित रहता है।
- धूप, ताजी हवा, स्वच्छ पानी और सादा जीवन स्वस्थ रहने के लिए जरूरी है - यदि हम इस तथ्य को समझ लें और व्यवहार में लाएं, तो शरीर को रोगग्रस्त होने से बचाया जा सकता है।
- रात में एक तोला त्रिफला चूर्ण एक गिलास पानी में भिगोकर रख दें। सुबह जगने के बाद छानकर उस पानी का सेवन करें। इससे शरीर हमेशा निरोग रहता है।
- प्रतिदिन थोड़ी देर के लिए घर में अगरबत्ती, कपूर या चंदन का धुआं करें। इससे घर का वातावरण पवित्र होता है, जो कि स्वस्थ रहने के लिए अति आवश्यक है।
- हमेशा नाक से ही सांस लें। मुंह से सांस लेने से आयु कम होती है, अतः ऐसा न करें।
- मानसिक तनाव से मुक्त रहने का प्रयास करें। यज्ञ, हवन, ध्यान, स्वस्थ मनोरंजन, भजन व कर्णप्रिय ध्वनि सुनना आदि इस दृष्टि से विशेष रूप से लाभप्रद है।
- सप्ताह में एक दिन सरसों के तेल से पूरे शरीर को मालिश करें।
- सप्ताह में एक दिन केवल नीबू पानी पर उपवास करें, इससे पाचन शक्ति बेहतर होती है और शरीर स्वस्थ रहता है।
- चौबीस घंटे में कम से कम तीन लीटर पानी जरुर पिएं। इससे शरीर का शोधन हो जाता है।
- खान-पान, व्यायाम, श्रम, विश्रामि आदि में आति से बचें, क्योंकि अति हर हाल में नुकसानदेह ही होती है। - **श्रीमती दीपाली वर्मा, सुपेला-भिलाई**

मौत की मिट्टी

माँ ने ममता से सिंच तुझे, किस मुश्किल से पाली है।
आज उसी को छोड़ तू कैसे ? इस निर्मम, आंगन में आया होगा ॥
तुझे तेरे बचपन का साथी, देख लेने आया है।
चल उठ घर चल, माँ ने तुझे बुलाया है ॥
सो मत प्यारे आँखे खोल, जो तू चाहता ओ तो बोल।
दुनिया तेरे कदमों में रख दूँ, माँ के लाल अब आँखे खोल ॥
बचपन सा जिद अब ठीक नहीं, याद नहीं क्या छड़ी की लोर।
पर आज हाथ है खाली माँ के, माँ के लाल कुछ तो बोल ॥
चूरा-चूरा कर खाते हम तुम, माँ कहती हमें रोटी चोर।
कैसे करता जिद पिता से, लेते नहीं जब खिलौने मोल ॥
यही जिद फिर आज कर रहा, कर रहा बचपन सा ढोंग।
मिट्टी तुझे क्या इतनी प्यारी, है क्या, हमसे भी अनमोल ॥
उठ प्यारे माँ आ जाएगी, जिद मत कर इस मिट्टी के लिए।
छड़ी पकड़ कर दौड़ाएगी, पाँच मुट्ठी मिट्टी के लिए ॥
दौड़ा-दौड़ा पास आएगा, तब मैं हो जाऊँगा नाराज।
आज तुझे समझा रहा हूँ, फिर न आऊंगा कल तेरे पास ॥

रचयिता - **नंदकिशोर कश्यप,**
मु.-पो. नवाढ़, जिला-जांजगीर चांपा (छ.ग.)

हाथ में बसंत

एक हाथ में बसंत
दूसरे में पतझड़ लेकर
अनुभूतियों के बोझ तले
बनाए थे हमने सपनों के घरोंदे

०

संदर्भहीन जीवन के समझौतों में
रिश्तोंके परिभाषित हो जाने पर
कहां तक जायेंगे हम...
आखिर कहाँ तक ?

००

मौन के जंगलों में भटकते
और अपनी ही प्रतिध्वनि से डरर
प्राची के सूर्य और शबनमी दूब से
थकी हुई कुहासों की शाम तक
हम घिसटते रहते हैं
रेंगते रहते हैं...
और कितना सिकुड़ते हैं
फिर भी अपनी जगह ठहरे हैं

०००

एक बोझिल अहसास
पर्त दर पर्त
अंतर्मन के किसी कोने पर
दस्तक देता है बार-बार
क्या ऐसा भी होगा कभी
कि हम पतझड़ से नहीं डरेंगे
और जलते हुए रास्तों पर
एक हाथ बसंत
दूसरे में पतझड़ लिये
चलते ही रहेंगे, चलते ही रहेंगे।

- राजकुमार जैन "राजन"
चित्रा प्रकाशत, आकोला-३१२२०५
(चित्तौड़गढ़) राज.

मुस्लिम समस्या का निदान - कुछ सूत्र

१. देशों में बाहरी धर्म के कारण देशवासियों की राष्ट्र निष्ठा का विभाजन होता है।

२. उक्त स्थिति के लिए राजा कालस्यकारणम् होता है। धर्म राज्याश्रय में पले पढ़े हैं, इस लिए शासन प्रयत्न कर सकता है - (१) शासन धर्म परिवर्तन और इसके कारण उत्पन्न परिणाम को राष्ट्रीय समस्या घोषित करे। (२) शासन मूल धर्म में लौटने वालों को प्रोत्साहन/सहयोग करे। (३) शासन वर्तमान मुस्लिमों के हिन्दू गोत्र प्रकाशित कर, उन्हें प्रयोग करने वालों को विशेष भत्ता दे।

३. मतभेद :- कारण और निवारण - कोई कहे या न कहे, हिन्दुओं का मुस्लिमों से मतभेद दो मुख्य कारणों से है :- (१) मांसाहार एवं क्रूरता (२) कामुकता एवं निकट रिश्तों में विवाह इस समस्या के निवारण के लिए शासन मांसाहार तथा निकट रिश्तों में विवाह के दोष स्थापित करके उन्हें सात्विक बनाए। (२) शासन सात्विक लोगों के हिन्दु विवाह को प्रोत्साहन दे। (३) शासन मुस्लिमों को अपने वर्तमान विवादित स्वरुप की अपने महान् पूर्वजों से तुलना करके यह बताए कि विध्वंस से रचनात्मकता, तथा तामसिकता से सात्विकता बड़ी चीज है।

४. इससे उनके मनों में अच्छाई का सूर्योदय होगा और हिन्दू भी प्रेम करने लगेंगे। यही हिन्दुत्व का रचनात्मक स्वरुप है। बुराईयों को कोसते रहने मात्र से कुछ नहीं होगा। घृणा से हिन्दू धर्म टूटा है और प्रेम सहयोग से पुनः जुड़ेगा।

५. शासन उक्त अल्प अर्थभार वहन करके देश में कौमी एकता रुपी अद्भुत, अतुल्य एवं अमूल्य ईश्वरीय वरदान प्राप्त करेगा।

- रमेशचन्द्र चौहान, २६२-ए, पार्श्वनाथ नगर,
केशरबाग रोड, इन्दौर-४५२००९

आरोग्य जगत्

मोटापा और होमियोपैथी चिकित्सा

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

मोटापे को अधिकतर लोग इसे इक्कीसवीं शताब्दी की सबसे गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में देखते हैं। मोटापा वो स्थिति होती है, जब अत्यधिक शारीरिक वसा शरीर पर इस सीमा तक एकत्रित हो जाती है कि वह स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव डालने लगती है। मनुष्य को प्रकृति की ओर से संतुलित और सुडौल शरीर मिलता है, पर वह गलत रहन-सहन, बुरी आदतें तथा खान-पान से अनियमितता के कारण इस शरीर को बेडौल बना लेता है। आधुनिक समय में यह बीमारी के रूप में बहुत तेजी से फैल रहा हैं। मोटापे से मधुमेह, उच्च रक्तचाप, दिल की बीमारी, जोड़ों का दर्द, गठिया, घुटनों में दर्द की संभावना भी अधिक होती है। आयु की सीमा भी घट सकती है।

पिछले २० वर्षों के दौरान वयस्कों के बीच मोटापे की समस्य दुनिया भर में काफी बढ़ी है, नये शोध के अनुसार अस्सी लाख से अधिक लोग मोटापे से ग्रसित हैं। यह वृद्धि केवल वयस्कों के लिए ही सीमित नहीं है, बल्कि युवा लोग १९८० के बाद तीन गुना इस समस्या से ग्रस्त है। यदि शीघ्र ही इस समस्या का समाधान नहीं किया गया तो संपूर्ण विश्व में सबसे ज्यादा लोग इस समस्या से ग्रस्त होंगे।

मोटापे का प्रमुख कारण :- अधिक उम्र में गर्भावस्था (जो बच्चों में मोटापे के लिए संवेदनशील कारण हो सकता है)। कम चलने और शारीरिक शिक्षा में कमी, अत्यधिक टेलीविजन देखना, अन्तः श्रावी विकास, गतिहीन जीवनशैली, अधिक चर्बीयुक्त आहार का सेवन करना। कम व्यायाम करना और स्थिर जीवनयापन। असंतुलित व्यवहार और मानसिक तनाव की वजह से लोग ज्यादा भोजन करने लगते हैं। शारीरिक क्रियाओं के सही ढंग से नहीं होने पर भी शरीर में चर्बी होने लगती है। बाल्यावस्था और युवावस्था के समय मोटापा वयस्क होने पर भी रह सकता है। अपर्याप्त नींद, अधिक धूम्रपान, मांसाहारी भोजन, अनुवांशिकता, कारों पर निर्भरता आदि।

होमियोपैथी उपचार :- होमियोपैथी चिकित्सा मोटापा एवं उसके विभिन्न पहलुओं का उपचार करता है। इन दवाओं से पाचन क्रिया सुदृढ़ होती है। अपच की क्रिया अच्छी होती है जिसकी वजह से मोटापा कम होता है। वजन घटाने के लिए कई लोग होमियोपैथी का सहारा लेते हैं। वजन घटाने के लिए होमियोपैथी उपचार सुरक्षित माना गया है एवं यह सभी उम्र के लोगों के लिए कारगार एवं उपयुक्त होता है। वजन घटाने के लिये होमियोपैथी में कई प्रभावी उपचार उपलब्ध है। वजन घटाने के पूर्व एक महत्वपूर्ण बात पर विचार अवश्य कर लेना चाहिए कि आपका वजन कितना है तथा आपके कितना वजन घटाने की जरुरत है। इसके लिए आपको होमियोपैथी चिकित्सक से मिलकर वजन कम करने का सबसे अच्छे विकल्प का परामर्श लेना चाहिए साथ ही उपचार प्रारंभ करने से पूर्व आपको यह भी जान लेना चाहिए कि आपको अपने जीवनशैली में क्या-क्या बदलाव लाना है। कई रोगियों को मेरे उपचार एवं सलाह से अत्यधिक लाभ मिला है एवं कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

प्रमुख होमियो औषधियाँ :- कल्केकार्व, नसवोमिका, चायना, पल्साटिला, अर्जेन्ट्रमनाईट्रिकम, फाइटोलेंक्का बेरी, हाईड्रेस्टिस, कार्बोजेज आदि।

मोटापा कम करने के उपाय (पथ्य)- खाने में गेहूँ के आटे की चपाती बन्द करके जौ और चने के आटे की चपाती लेनी चाहिए। नींबू का रस गुनगुने पानी में निचोड़कर पीना चाहिए। मौसमी हरी सब्जियाँ का प्रयोग करना चाहिए। भूने चने, मूंगदाल, दलिया आदि का सेवन करने से फैट कम होता है। सुबह नाश्ते में अंकुरित अनाज लेना चाहिए। प्रतिदिन व्यायाम करना चाहिए।

अपथ्य :- मांसाहार, तेल से बनी हुई चीजें, चिकनाईयुक्त आहार का सेवन नहीं करना चाहिए। फास्ट फूड, जंक फूड, कचौरी, समोसे, पिज्जा, बर्गर, कोल्ड ड्रिंक का सेवन नहीं करना चाहिए। मानसिक तनाव से बचना चाहिए।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध रायपुर (छ.ग.)

समाचार प्रवाह

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) का ९५वाँ जन्म दिवस अत्यन्त धूमधाम से सम्पन्न

नई दिल्ली। दिल्ली की समस्त आर्य संस्थाएँ एवं समस्त एम.डी.एच. परिवार द्वारा महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) संस्थापक संचालक एम.डी.एच. संस्थान के ९५वाँ जन्म दिवस तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम नई दिल्ली में सोमवार दिनांक २६ मार्च २०१८ को प्रातःकाल ९ बजे से वैदिक यज्ञ द्वारा सम्पन्न हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम "प्रेरणा" प्रातः १०.३० बजे से अपरान्ह २ बजे तक रंगारंग कार्यक्रम, जिसमें विभिन्न प्रांतों से आये हुए कलाकार भाग लिये। तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में हुआ। इस कार्यक्रम में सम्पूर्ण भारत वर्ष के प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान एवं मंत्री उपस्थित हुये थे। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा से प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य एवं श्री दीनानाथ वर्मा भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। हजारों की संख्या में अबाल वृद्ध, आर्य नर-नारियाँ भव्य समारोह में उपस्थित होकर महाशय धर्मपाल जी को स्वस्थ, दीर्घायु, शतायु एवं शतोत्तर जीवन के लिए शुभकामना व्यक्त की गई। महाशय धर्मपाल जी के जीवन से ईश्वर की आज्ञा पालन, सतत क्रियाशीलता, मातृ-पितृ भक्ति, समाज कल्याण, यज्ञीय भावना, राष्ट्र उत्थान की भावना, दृढ़ इच्छा शक्ति, ईमानदारी, परोपकार, सेवा भाव युक्त स्वभाव, मेहनत, स्वास्थ्य एवं संयम की प्रेरणा सभी उपस्थित भद्र लोगों ने प्राप्त किया।

- कार्यक्रम से लौटकर सभा मंत्री

आर्यसमाज मुड़ागांव में धूमधाम से मना आर्यसमाज स्थापना दिवस

मुड़ागांव (रायगढ़)। दिनांक १८-३-२०१८ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आर्यसमाज मुड़ागांव में पूरे गांव वालों की पावन उपस्थिति में वेद विद्या मंदिर प्रांगण में हिन्दू नववर्ष एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर प्रान्तीय वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री कान्हूराम आर्य के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज मुड़ागांव के नवनिर्वाचित प्रधान श्री कपिल आर्य के लगन व मेहनत से गांव के सैकड़ों लोग यज्ञ में शामिल हुए। दोपहर ४ बजे पूरे गांव में नगर कीर्तन किया गया अपने-अपने द्वार पर कलश बिठा कर नववर्ष का स्वागत किया गया। लोगों के द्वारा बुराईयों को त्याग कर अच्छे चरित्रों को अपनाने का संकल्प लिया गया। अधिष्ठाता कान्हूराम आर्य जी के द्वारा भजन व उपदेश सुनाया गया। इस अवसर पर मुड़ागांव आर्यसमाज निर्वाचन भी सपन्न हुआ, जिसमें सर्वसम्मति से श्री कपिल आर्य को प्रधान नियुक्त किया गया।

संवाददाता : कान्हूराम आर्य, प्रांतीय वेद प्रचार अधिष्ठाता

सभा कार्यालय दुर्ग में नवसम्वत्सर सम्पन्न

दुर्ग। दिनांक १८-३-२०१८ को छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा परिसर स्थित आर्यसमाज आर्यनगर की पवित्र यज्ञवेदी पर विधिवित वृहदयज्ञ का अनुष्ठान किया गया, जिसमें चारों वेदों के चुने हुए विशिष्ट मंत्रों से आहुतियां प्रदान कर मंगलकामनाएँ की गई। विशिष्ट यज्ञ का ब्रह्मत्व सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य ने कुशलतापूर्वक किया। इस अवसर पर सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, कोषाध्यक्ष श्री जोगीराम आर्य सहित सभा पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्य उपस्थित रहे। परिसर वासी आर्यजनों सहित बड़ी संख्या में आर्यसमाज के सदस्यों ने भी इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। यज्ञोपरान्त अपने उद्गार व्यक्त करते हुए सभा प्रधान ने वेदमंत्रों के अनेक प्रमाण देते हुए भारतीय नवसम्वत्सर के वास्तविक महत्व का प्रतिपादन किया। आधुनिक नया वर्ष मनाने की अव्यावहारिक परम्परा का खण्डन करते हुए बतलाया कि १ जनवरी को नया वर्ष मनाना बेतुका है उस समय न प्रकृति बदलती है न सत्र बदलता है न वातावरण में परिवर्तन दिखता है, कैसा नववर्ष ? हमें विदेशियों का अन्धानुकरण त्यागकर अपने पुरखों की पवित्र परम्परा को सुरक्षित रखने की जरुरत है। प्रसाद वितरण के साथ शांति पाठ पूर्वक समारोह सम्पन्न हुआ।

संवाददाता : निजी संवाददाता कार्यालय

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (सासनी) हाथरस

नवीन प्रवेश प्रारम्भ सत्र-२०१८-१९

१. प्रवेश कक्षा शिशु (नर्सरी) से कक्षा नवीं तक किसी भी कक्षा में लिया जा सकता है।

२. कक्षा ११वीं और १२वीं (उत्तरमध्यमा, विद्याविनोद, शास्त्री, विद्यालंकार) कक्षा में भी प्रवेश लिया जा सकता है।

३. प्रवेश के समय छात्रा के पासपोर्ट साइज ३ रंगीन फोटो तथा छात्रा से मिलने वाले किन्ही चार व्यक्तियों के पासपोर्ट रंगीन फोटो, अंकतालिका, काउण्टर साइन, टी.सी. पहचान पत्र, आधार कार्ड लेकर आयें।

४. मान्यता - गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

५. नवीं से बारहवीं कक्षा तक गुरुकुल कांगड़ी पाठ्यक्रम में (एन.सी.आर.टी.) का पाठ्यक्रम संचालित है।

६. नवीं से बारहवीं कक्षा तक कला वर्ग के साथ-साथ विज्ञान वर्ग का भी पाठ्यक्रम संचालित है।

७. अतिरिक्ति प्रशिक्षण :- १. संगीत (गायन, वादन, तबला) में प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद की परीक्षायें (जूनियर डिप्लोमा से लेकर प्रभाकर तक) संचालित है। २. खेलकूद तथा शारीरिक प्रशिक्षण (जूडो-कराटे, बैडमिंटन, खो-खो) ३. योग प्रशिक्षण।

८. व्यावसायिक प्रशिक्षण :- कन्या गुरुकुल निजी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र (आई.टी.आई.) में कोपा एवं स्विंग टेक्नोलाजी का एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम है कन्या गुरुकुल निजी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र एन.सी.वी.टी. द्वारा मान्यता प्राप्त है।

नोट : कन्या गुरुकुल में प्रवेश योग्यता परीक्षा के आधार पर लिया जायेगा।

कन्या गुरुकुल अलीगढ़, आगरा मार्ग पर सासनी-हाथरस के मध्य स्थित है।

सम्पर्क सूत्र :- ०९२५८०४०११९, ०८००६३४०५८३, ०९४५८४८०७८१, ०९९२७९९१९२२, ०७८३०२८९३७९

ई-मेल : kanyagurukulmhv.hathras@gmail.com & kgpiti2007@gmail.com

- मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या : डॉ. पवित्रा विद्यालंकार

श्रीरामनवमी धूमधाम से मनाई गई

दुर्ग। विगत २५ मार्च रविवार प्रातः ९ बजे छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा परिसर स्थित आर्यसमाज भवन में बड़े समारोह के साथ मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी की नवमी मनाई गई। इस अवसर पर सभा के धर्माचार्य आचार्य उद्धवप्रसाद शास्त्री ने वृहद्यज्ञ का कुशल सम्पादन किया। चारों वेदों के चुने हुए मंत्रों से भारी संख्या में उपस्थित आर्यजनों ने पवित्र आहुतियां प्रदान कर मंगल कामनाएँ की। इस अवसर पर समारोह में विशेष रुप से पधारे आचार्य बलदेव जी ने श्रीराम की जयन्ती का महत्व बतलाते हुए उनके अनुकरणीय व्यक्तित्व पर सविषद् प्रकाश डालते हुए कहा- लाखों साल बीतने के बाद भी आज श्रीराम हमारे सबसे बड़े आदर्श है। अग्निदूत पत्रिका के सम्पादक आचार्य कर्मवीर शास्त्री की गरिमामयी उपस्थिति संयोगवश रही, उन्होंने अपने उद्गार प्रकट करते हुए श्रीराम के अस्तित्व पर प्रश्न करने वाले बुद्धि भ्रष्ट विचारकों को झकझोरते हुए कहा - क्या इस संसार में किसी अस्तित्वहीन व्यक्तित्व की जन्मदिन मनाने की अन्तहीन परम्परा कभी देखी गई?उत्तर है - नहीं। जब लाखों वर्षों से भारतवासी अपने महापुरुष का एक निश्चित दिन जन्मोत्सव मनाते आ रहे हैं फिर कल्पना की वस्तु कैसे हो गए श्रीराम ? उनके सर्वांगपूर्ण चरित्र से शिक्षा लेकर हम महान बन सकते हैं। श्री दिलीप आर्य ने वैदिक सिद्धान्तों पर चर्चा की। श्री ऋषि कुमार आर्य ने सुन्दर प्रभुभक्ति भजन प्रस्तुत कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। शांतिपाठ के साथ समारोह का समापन हुआ।

- निजी संवाददाता कार्यालय

ओ३म्
Your child's future with Indian culture...
Maharishi Dayanand Saraswati Ji
SHIVALIK
GURUKUL
C.B.S.E. Pattern Only for Boys
Swami Shraddha Nand ji
(क) शिक्षा (आधुनिक शिक्षा पद्धति के साथ-साथ वैदिक धर्म के आलोक में नैतिक शिक्षा द्वारा जीवन-निर्माण)।
(ख) सुरक्षा (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं चारित्रिक)।
(ग) संस्कार (शरीर व आत्मा को श्रेष्ठ गुण, कर्म एवं स्वभाव से सुशोभित करना)।
(घ) सेवा (गुरुकुल में प्राप्त उत्तम गुणों के माध्यम से परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व की उन्नति के लिए अपना सात्त्विक योगदान सेवा के रूप में करना)।
"शिक्षा, सुरक्षा, संस्कार और सेवा"
इन चार उद्देश्यों के साथ गुरुकुल का संचालन होगा।
Features
Digital Smart Classes • Sms Alert Service
Lush Green Playground • Eco Friendly Environment
Activity Cum Learning Room • Experienced & Dedicated Staff
Special Focus on Moral Values • Special Focus on Interaction in English
Horse Riding & Gun Shooting • Digital & Well equipped Library
Hi-Tech Computer Labs • Music Room
Co-curricular Activities
Debate • Quiz • Art & Craft
Painting • Educational Trips
Meditation, Yoga & Hawan
Inter House Competitions • Creative Writing
Festival Celebrations • Music & Dance
Language Lab Activities • Collage Making
Book Reading Sessions • MUN Clubs
Date of Entrance Test : 25th March, 2018
Timing : 10.00 a.m. to 11.30 a.m.
Venue : Shivalik Gurukul
Declaration of Result : 2.00 p.m. on same day
Admit card will be issued at Shivalik Gurukul Between 9.00 a.m. to 9.30 a.m.
Vill Aliyaspur, P.O. Sarawan, Mullana, Ambala (Haryana), E-mail: shivalikgurukul.ambala@gmail.com
Admission Helpline : 8901054781, 9671228002, 8813061212, Website : www.shivalikgurukul.com
Warden Contact No's: 9053720871, 9053720873, 9053720875, 9053720876

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल महाविद्यालय गंगा के पावन तट पर ऋषि महर्षियों की तपस्थली, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहां संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का उत्तम ज्ञान कराया जाता है। सुसज्जित छात्रावास उपलब्ध है। नये सत्र में प्रवेश १ अप्रैल २०१८ से आरम्भ हो रहे हैं। यहां पर मध्यमा स्तर (इण्टरमीडिएट) की परीक्षाएँ उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। विद्यालय के २ रसोईया, एक वार्डन (संरक्षक), एक क्लर्क तथा संस्कृत संस्थापक के मानदेय पर तीन संस्कृत अध्यापक व दो आधुनिक विषय के अध्यापकों की आवश्यकता है। शीघ्र सम्पर्क करें।

स्वामी आनन्दवेश, बलदेव नैष्ठिक

प्रबंधक - ९९९७४३७९००

प्रेमशंकर मिश्र

प्रधानाचार्य - ९४११४८१६२४, ९९९७०४७६८०

गुरुकुल झज्जर में प्रवेश सूचना

सभी सज्जनों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध आर्ष पाठ विधि के केन्द्र महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में नूतन वर्ष हेतु प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है। प्रवेश हेतु परीक्षा तिथियाँ इस प्रकार है :-

१ और १५ अप्रैल (प्रथम एवं तृतीय रविवार)
६ और २० मई (प्रथम एवं तृतीय रविवार)
३ और १७ जून (प्रथम एवं तृतीय रविवार)

प्रवेशार्थी छात्र कम से कम पंचम कक्षा उत्तीर्ण और अविवाहित होना अनिवार्य है। प्रवेशार्थी छात्र स्कूल त्याग का प्रमाण पत्र तथा अपना फोटो साथ लायें। प्रवेश शुल्क २००० रु. केवल एक बार। भोजन शुल्क १८००० रु. वार्षिक (यह शुल्क प्रति ६ मास में ९००० की दो किश्तों में भी दिया जा सकता है।

शेष जानकारी हेतु निम्नलिखित चलभाष नम्बरों पर सम्पर्क करें :-

(आचार्य) ९४१६०५५०४४

(कार्यालय) ९४१६६६१०१९

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

आर्यसमाज मुड़ागांव (रायगढ़) में आर्यसमाज स्थापना दिवस व नवसंवत्सर सम्पन्न

आर्य व संस्कृत जगत् का गौरव

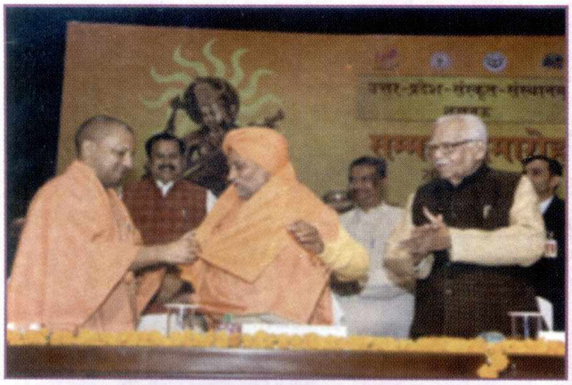

उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान के तत्वावधान में दिनांक 7 फरवरी 2018 को लोक भवन, लखनऊ में संस्कृत विद्वान् सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसमें प्रदेश के महामहिम राज्यपाल माननीय श्री रामनाईक जी व मुख्यमंत्री श्री आदित्यनाथ योगी जी ने वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ व दर्शन आदि के मर्मज्ञ सुरभारती के सच्चे साधक गुरुकुल प्रभात आश्रम के कुलाधिपति श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती का सम्मान कर संस्कृत परम्परा के इतिहास को स्वर्णाक्षरों में अंकित किया। तदुपरांत पूज्य स्वामी जी, महामहिम राज्यपाल तथा माननीय मुख्यमंत्री जी ने सभी सम्मानित विद्वानों को शुभकामनाएँ व आशीर्वाद प्रदान किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। उपस्थित आगुन्तकों व अतिथियों ने संस्थान के अध्यक्ष डॉ. वाचस्पति मिश्र के प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्रद्धेय गुरुवर को शत-शत नमन व वाचस्पति जी को यशस्वी जीवन की शुभकामनाएँ।

सौजन्य – प्रेमप्रकाश शास्त्री, स्नातक परिषद

CHH-HIN/2006/17407 अप्रैल 2018 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग / 99/2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2017-18-19

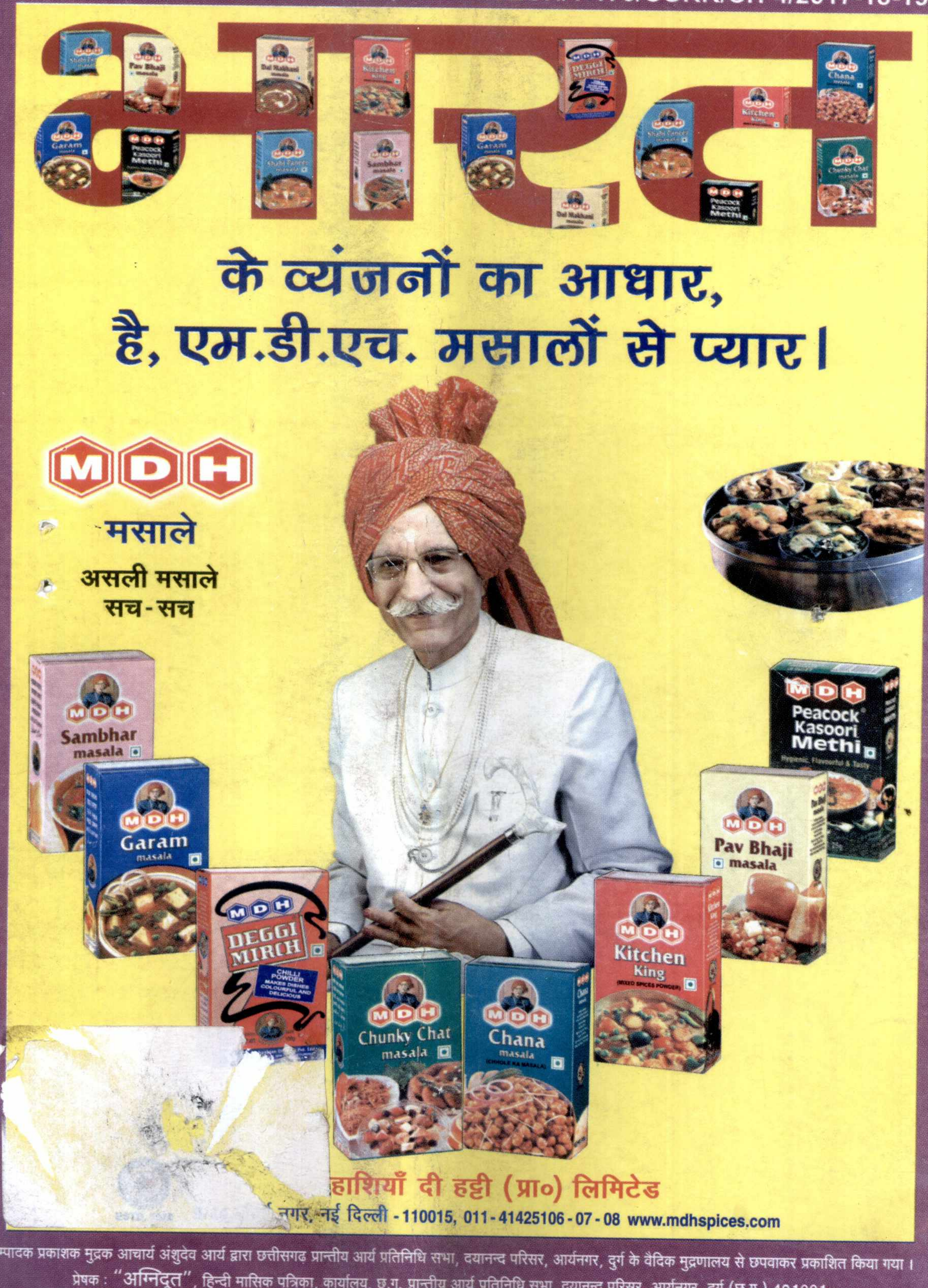

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001